ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

अप्रैल, 2021

- हमारी प्यारी पृथ्वी
- अप्रैल की महिमा
- बचा लो पृथ्वी को
- मूल्यवान है जल

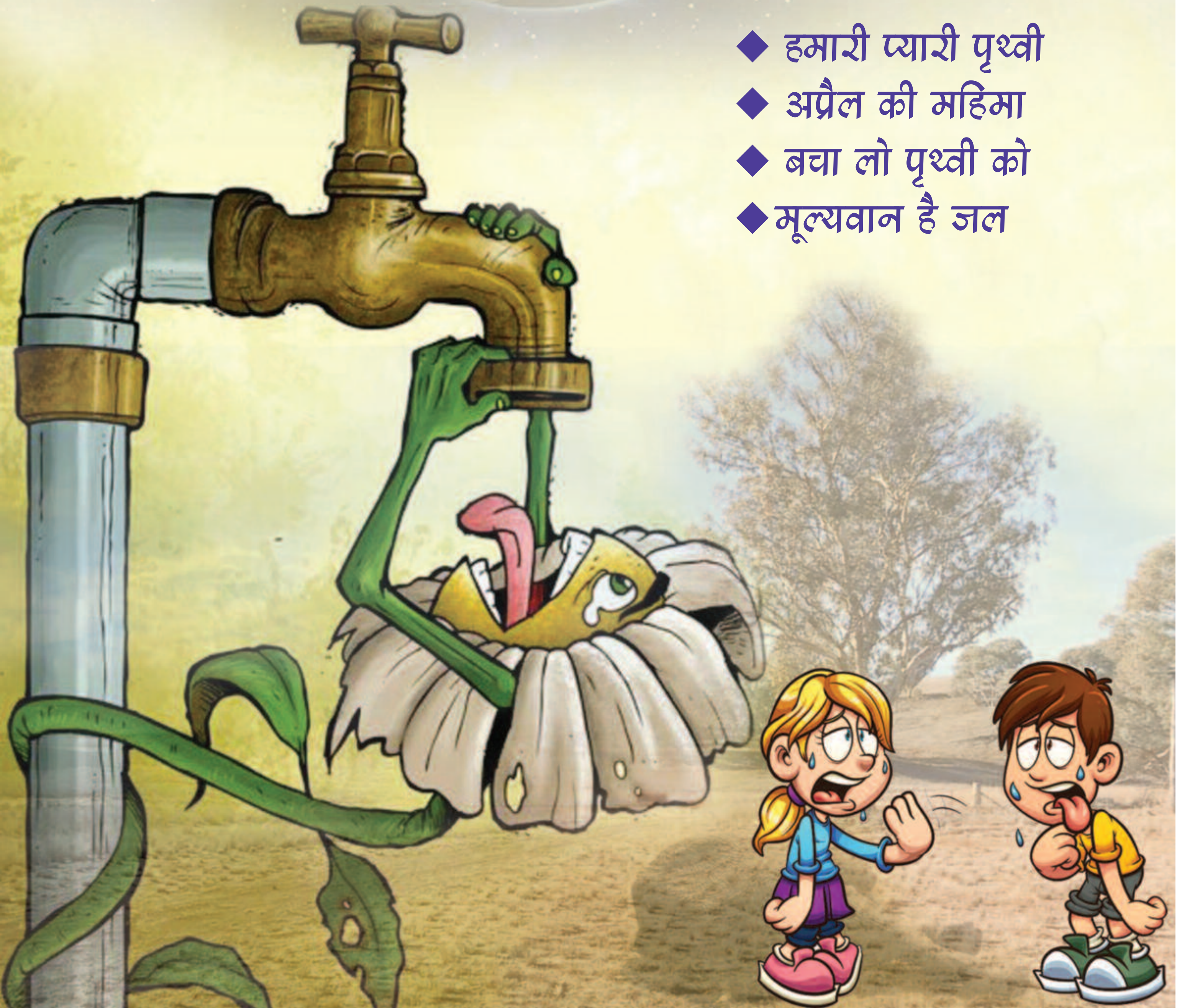

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

अप्रैल 2021
वर्ष : 1, अंक : 4

इस अंक की रचनाएं

कहानियां

देवेंद्र कुमार : बुरी लाइन 8
अखिलेश श्रीवास्तव चमन : अंग्रेजी का ट्यूशन 10
गोविंद शर्मा : गलती बंट गई 16
अरविंद कुमार 'साहू' : जंगल में फटफटिया 20
सुकीर्ति भटनगर : अप्रैल फूल 24
मंजुरानी जैन : चूहेमल चले बरात 28
सोमदत्त शर्मा : पैपर और व्हिस्की 31
नीलम राकेश : 100 नम्बर का कमाल 34
डॉ. के. रानी : सीपी का जाल 36

कविताएं

दिविक रमेश : फूल खिलाऊं 23
राजेन्द्र श्रीवास्तव : पृथ्वी कितनी प्यारी है 26
सन्तोष कुमार सिंह : मूल्यवान है जल 27
फहीम अहमद : मम्मी की मीठी पप्पी 30
सूर्यकुमार पांडेय : अच्छे चैनल दिखलाओ 39
हरिन्दर सिंह गोगना : आलस को दूर भगाना 40

जानकारी

देवेंद्र मेवाड़ी : हमारी प्यारी पृथ्वी 4
अनिल जायसवाल : बचा लो पृथ्वी को 18
खेल : आईपीएल : क्रिकेट का प्रीमियर टूर्नामेंट 59
अनिल : अप्रैल की महिमा 13

विविध

चित्र कथा : अप्रैल फूल बनाया 41
जरा सोचो 44
आइवर यूशिएल : पजल्स 45
पुस्तक परिचय 58
हंसना जरूरी है 62
धन्यवाद ज्ञापन 63, अपील 64

बाल मंच

राइजिंग स्टार : प्रिशा चौखड़ा : नन्ही लड़की-बड़ा काम 45
पेंटिंग्स (51 से 53) : तानिया कौशिक, काव्या श्रीवास्तव, नीतिका नीलाक्षी, विवान वरुण, आदिल सूद, रजत तिवारी , खुशी कौशिक, रितिका वेदुला
अंश बाली : काश, तुम नहीं आते कोरोना वायरस 54
कविताएं : अरायना भटनागर : मेरी मां, सुधांशी पटेल : तेरा प्यार न हो कम 55
कहानी : वाणी बंसल : जादुई चिराग था या... 56
परिणीता : शापित रबर-पेंसिल की दोस्ती 57

अब पृथ्वी तुम्हारे हवाले है

यह अप्रैल का महीना है। पर मन दुखी होकर पूछता है, "काहे का अप्रैल, कैसा अप्रैल?"

अप्रैल का महीना सबके लिए महत्वपूर्ण होता है। बच्चे नई कक्षा में जाने का जश्न मनाते हैं। किसान वैसाखी और फसल काटने का जश्न मनाते हैं। व्यापारी नए व्यापारिक वर्ष की शुरुआत 1 अप्रैल से करते हैं। पर यह सब कहां हैं?

एक साल हो गए, तुम बच्चों ने ठीक से स्कूल का मुंह नहीं देखा। कई स्कूल जबरदस्ती खुल रहे हैं, पर कोरोना संक्रमण सामने आने पर बंद हो जा रहे हैं। किसान फसल पर ध्यान न दे पा रहे हैं और धरने पर बैठे हैं। व्यापारी कोरोना की मार से उबर नहीं पाए, तो नए व्यापारिक वर्ष का स्वागत कैसे करें?

कोरोना का कहर जारी है। लोग इससे बचने की अब कोशिश न करके, इससे बचने का केवल दिखावा कर रहे हैं। कोरोना से बचाव का ज्ञान बांटने वाले बड़े-बड़े फिल्मी सितारे और क्रिकेटर्स के साथ बड़ी-बड़ी बातें करने वाले नेता कोरोना संक्रमण का शिकार हो रहे हैं।

मजे की बात यह है कि कोरोना लहर का बाद भी देश में कुम्भ से लेकर चुनाव तक बेधड़क आयोजित हो रहे हैं। उन्हें देखकर लगता है, कोरोना है नहीं, या मारक नहीं है।

अभी मैंने ट्रेन से यात्रा की। कोरोना से सुरक्षा का केवल दिखावा हो रहा है। सब अपनी जान पर खेलकर यात्रा कर रहे हैं। ऐसे में हम क्या करें या तुम बच्चों को क्या करना चाहिए?

बात कड़वी है, पर यह अब जरूरी है। अब बड़ों को आइना दिखाने का काम तुम बच्चे ही कर सकते हो। किसी को कोरोना सुरक्षा चक्र तोड़ते देखो, तो सबके सामने टोक दो। मत सोचो कि लोग क्या कहेंगे। हम बड़े अपनी लापरवाही से इस दुनिया को खत्म करने पर तुले हैं, पर यह दुनिया हमारी जागीर नहीं है। हमारे बड़े, इसे हमारे लिए सुरक्षित छोड़ गए थे। अब तुम्हें तुम्हारी दुनिया हम सुरक्षित नहीं सौंप रहें, तो तुम्हें हक है कि तुम इसके लिए आवाज उठाओ।

प्रकृति सबकी होती है और किसी की भी नहीं होती। मतलब हम इस धरती, पृथ्वी का ध्यान रखेंगे, तो पृथ्वी हमारा ध्यान रखेगी और अगर हम पृथ्वी को विनाश की तरफ धकेलेंगे, तो पृथ्वी हमारा विनाश कर देगी।

इसलिए समय का तकाजा है कि हम पृथ्वी के लोग संभल जाएं। नहीं तो अब इस पृथ्वी को बचाने की जिम्मेदारी तुम बच्चों को ही उठानी पड़ेगी। इसे बचाने के लिए भले ही तुम्हें हम बड़ों के सामने आवाज उठानी पड़े, बेधड़क उठाओ। शायद हम बड़ों का बहरापन तुम बच्चे ही खत्म कर पाओ।

अनिल जायसवाल

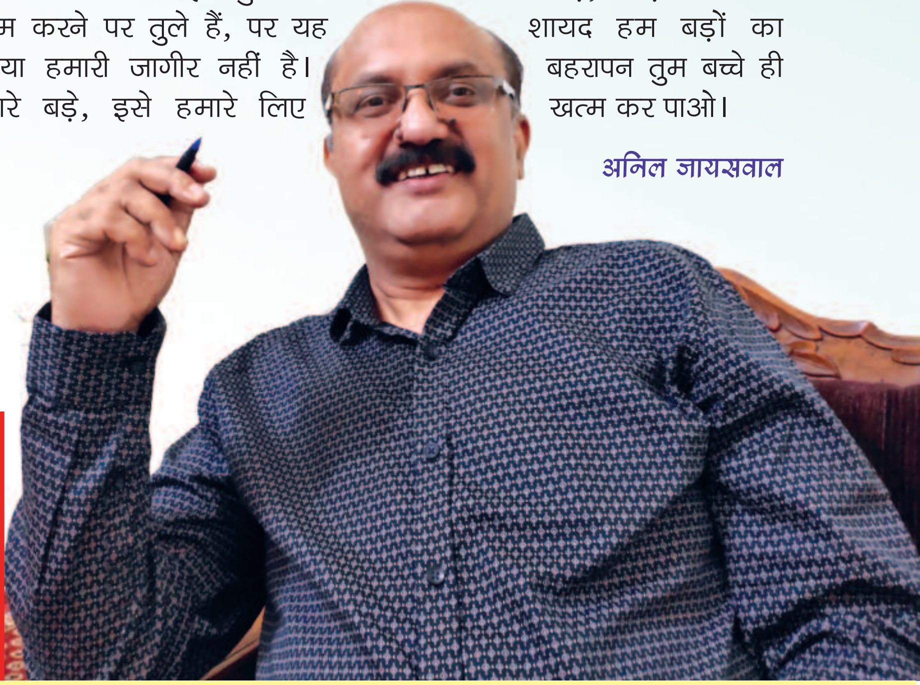

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें। यह एच्छिक है। धन्यवाद

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका पायस

संपादक : अनिल जायसवाल

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

◆ लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
◆ ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : PAYAS MAGAZINE
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

22 अप्रैल : पृथ्वी दिवस पर विशेष

हमारी प्यारी पृथ्वी

आओ दोस्तो, जरा अपनी प्यारी पृथ्वी पर नजर डालें। यह विशाल सौरमंडल का एकमात्र ऐसा ग्रह है, जिस पर जीवन है। इसमें कहीं ऊंची पर्वतमालाएं हैं, तो कहीं दूर-दूर तक फैले मैदान। कहीं गहरी घाटियां हैं, तो कहीं विशाल रेगिस्तान। कहीं हरे-भरे जंगल, तो कहीं विशाल गीले दलदल। कहीं सदानीरा नदियां बहती हैं, तो कहीं ऊंचे पहाड़ों से छल-छल झरने गिरते हैं। कहीं अथाह गरमी पड़ती है, तो कहीं कड़ाके की सर्दी। कहीं घनघोर वर्षा होती है, तो कहीं पानी की चंद बूंदें ही बरसती हैं।

और, मौसम? कभी खिली-खिली धूप, तो कभी भीषण गरमी, कभी शरदऋतु के गुनगुने दिन, तो कभी माघ-पूस के चिल्ला जाड़े। मौसम बदलते हैं, ऋतुएं आती हैं, जाती हैं।

जानते हो, क्यों होता है ऐसा? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हमारी प्यारी पृथ्वी अपनी धुरी पर खम देकर खड़ी है! यह अपनी धुरी की सीध से 235 अंश झुकी हुई है। इसलिए जब यह अपनी धुरी पर घूमती है, तो घूमते हुए लट्टू की तरह अंडाकार डोलती भी है। डोलते-डोलते सूर्य की परिक्रमा भी करती है। इस सब का नतीजा यह होता है कि पृथ्वी के हर हिस्से पर साल भर सूर्य की रोशनी एक समान नहीं पड़ती। इसीलिए पृथ्वी की भूमध्य रेखा के आसपास सदा बेहद गर्मी होती है। लेकिन, हम ज्यों-ज्यों उत्तर या दक्षिण की ओर बढ़ते हैं, तो तपन कम होने लगती है और मौसम खुशगवार लगने लगता है। और आगे बढ़ने पर तापमान कम होने लगता है और ध्रुवों पर यह न्यूनतम हो जाता है।

दोस्तो, ये हमारी पृथ्वी की जलवायु यानी आबोहवा के विविध रंग हैं। यह जलवायु की ही देन है कि पृथ्वी पर हरियाली लहलहाती है, कहीं झमाझम वर्षा होती है, कहीं भयानक सूखा पड़ जाता है और कहीं बर्फ की चादर फैल जाती है। हमारा रहन-सहन, खेतीबाड़ी और आवागमन, सभी कुछ जलवायु पर ही निर्भर करता है।

लेकिन, अब पृथ्वी की आबोहवा गड़बड़ा गई है। पहले तक अपने सही समय पर ऋतुएं बदलती थीं। समय पर वसंत आता था। मई-जून में प्रचंड गरमी पड़ती थी, फिर वर्षा

अपने लेखक को जानिए

देवेंद्र मेवाड़ी : बच्चों के 'देबू दा'। सरल, सरस भाषा में विज्ञान बच्चों और लोगों तक पहुंचाने में माहिर। पूसा इंस्टिट्यूट, पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय और पंजाब नैशनल बैंक में काम किया। हिंदी भाषी प्रांतों में घूमकर हजारों बच्चों को विज्ञान की कहानियां सुना चुके हैं। दर्जनों पुस्तकें प्रकाशित।

ऋतु आती थी। उसके बाद हेमंत ऋतु और फिर शीत ऋतु की ठिठुरन शुरू हो जाती थी। ऋतुओं के हिसाब से किसान खेती करते थे, बोआई और कटाई के उत्सव मनाते थे। यहां तक कि पशु-पक्षी भी ऋतुओं के हिसाब से अपनी लंबी प्रवास यात्राएं करते थे या ठंडे प्रदेशों में गुफाओं, कोटरों और बिलों में शीत निद्रा या ग्रीष्म निद्रा में सो जाते थे। नन्ही तितलियां वसंत के इंतजार में प्यूपा बनकर किसी टहनी, चट्टान या दीवार से लटक जाती थीं कि वसंत आएगा और वे पंख फड़फड़ाकर बाहर निकल आएंगी, मधु और पराग चूसने के लिए खिलखिलाते फूलों पर पहुंच जाएंगीं। इस तरह जलवायु के साथ हर जीवधारी का बेहद नाजुक संबंध था।

अब यह संबंध गड़बड़ा गया है। ऋतुएं समय पर नहीं आ रही हैं। वसंत समय पर नहीं आता, तो फूल भी समय पर नहीं खिलते। वसंत की आहट न पाकर तितलियां प्यूपों के ताबूत में ही बंद रह जाती हैं। बेमौसम बरसात होती है। कई बार तो बरसात भी ऐसी कि मानो प्रलय आ गया हो। जैसे कुछ साल पहले केदारनाथ घाटी में हुआ। अगर कहीं सूखा पड़ रहा है, तो इतना सूखा कि हजारों लोगों के सपनों को सुखा दे। तूफान ऐसे कि तांडव दिखाकर तबाही मचा दें। पहाड़ों में बेमौसम बारिश और ओलों की मार से बागबानों की फलदार फसलों के फूल झर जाते हैं, तो मैदानों में गेहूं की पकी हुई फसलें तबाह हो जाती हैं।

लेकिन क्यों? वैज्ञानिकों का कहना है कि पृथ्वी की आबोहवा खराब हो गई है और मौसम का मिजाज बदल गया है। और यह खुद हम मनुष्यों की करतूत का नतीजा है। अन्यथा, पहले तो सब कुछ ठीक-ठाक था। नदियां कल-कल, छल-छल बह रही थीं, हरे-भरे जंगल ठंडी बयार बहाकर हमारी सांसों के लिए प्राणवायु ऑक्सीजन दे रहे थे। हम प्रकृति में, प्रकृति के साथ रह रहे थे। लेकिन, विकास की एक ऐसी अंधी दौड़ शुरू हुई कि जमीन के चप्पे-चप्पे पर कंक्रीट के जंगल खड़े होने लगे। हरे-भरे जंगल कटने लगे और शहर फैलने लगे। लोग यह भूल गए कि मां प्रकृति पेड़-पौधों और हरे-भरे जंगलों में हमारी सांसें तैयार करती हैं। उनकी बनाई प्राणवायु ऑक्सीजन में ही सांस लेकर हम जीवित हैं।

सच तो यह है दोस्तो कि प्रकृति ने हवा में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य गैसों की ठीक उतनी ही मात्रा रखी थी, जितनी हमारे सांस लेने के लिए जरूरी थी। जब तक ऐसा था, तब तक सब कुछ ठीक रहा। जीने के लिए जैसी जलवायु चाहिए थी, वह वैसी ही थी। लेकिन, फिर लाखों वर्ष पहले दो पैरों पर खड़े हो गए। मनुष्य ने गुफाओं से निकलकर नदी-घाटियों में घर बनाकर बसना शुरू किया। पशुओं को पालतू बनाकर पशुपालन शुरू कर दिया। अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए वह जंगलों को काटकर खेती करने लगा। उसकी आबादी बढ़ती गई, जरूरतें बढ़ती गईं और जमीन हथियाने की हवस भी बढ़ती गई। आगे चलकर उसने तथाकथित विकास की दौड़ में घने जंगलों का सफाया करना शुरू कर दिया। हरे-भरे जंगल शहरों में तब्दील होने लगे। कल-कारखानों को चलाने के लिए बड़े पैमाने पर कोयला फूंका जाने लगा। सड़कों पर लाखों गाड़ियां पेट्रोल और डीजल का धुआं उगलने लगीं। इस तरह हर साल

लाखों टन कार्बन डाइऑक्साइड वायुमंडल में पहुंचने लगी।

इससे वायुमंडल में प्रकृति द्वारा तय किया गया गैसों का हिसाब गड़बड़ा गया। विकास की अंधी दौड़ जारी रही और आसमान में धुआं भरता गया। फल यह हुआ कि पृथ्वी पर तपन बढ़ती गई। सूर्य की जिस गुनगुनी गरमाहट ने कभी पृथ्वी पर जीवन पनपने और उसके फलने-फूलने में मदद की थी, वह विगत कुछ दशकों में धीरे-धीरे बढ़कर अब असहनीय होती जा रही है। वैज्ञानिक इसे वैश्विक तपन या ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं।

और दोस्तो, सन् 1780 के आसपास जेम्स वाट का धुआं उगलता भाप का इंजन आ खड़ा हुआ। रेलगाड़ी और कल-कारखानों को चलाने के लिए कोयला 'काला सोना' बन गया। औद्योगिक क्रांति हो गई और मशीनों को चलाने के लिए दुनिया भर में कोयले के भंडार खोजे जाने लगे। फिर मोटरगाड़ियों और मशीनों के लिए धरती के गर्भ में छिपे प्राकृतिक तेल के भंडारों की खोज शुरू हुई। कोयले और तेल के दहन से आसमान में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ती गई।

कल-कारखानों से वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ती ही चली गई। जंगलों के अंधाधुंध कटान से यह स्थिति और भी बिगड़ती गई। लाखों वर्षों से कोयले, तेल और प्राकृतिक गैस में कैद कार्बन भी धुएं के रूप में मुक्त होकर वायुमंडल में पहुंच गया। वैज्ञानिक ग्लोबल वार्मिंग का कारण ग्रीनहाउस गैसों को बताते हैं। यानी, वायुमंडल में मौजूद ऐसी कोई भी गैस, जो इंफ्रारेड किरणों की गरमी को सोखकर तापमान बढ़ा दे। मुख्य ग्रीनहाउस गैसें हैं : जल वाष्प, कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड और क्लोरोफ्लुओरोकार्बन (सीएफसी) रसायन। ग्रीनहाउस प्रभाव से गरमी बढ़ाने वाला मुख्य अपराधी कार्बन डाइआक्साइड गैस को माना गया है। अनुमान है कि हर साल करीब 32 अरब टन कार्बन डाइआक्साइड वायुमंडल में पहुंच रही है।

वैश्विक तपन के कारण ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है और ग्लेशियर भी पिघलकर सिकुड़ते जा रहे हैं। हिमालय क्षेत्र में ये तेजी से पिघल रहे हैं और आने वाले समय में इनके कारण नदियों में मिट्टी की गाद भरती जाएगी। गाद भरी नदियों में भारी बाढ़ आ सकती है। पृथ्वी के ध्रुवों पर जमा बर्फ के बाद हिमालय में ही बर्फ के रूप में सबसे अधिक पानी जमा है। ग्लेशियरों के पिघलने से भारत, नेपाल और चीन में भारी जल संकट पैदा हो सकता है।

बढ़ते तापमान के कारण पिछले 100 वर्षों में विश्व में समुद्रों का जल स्तर 10 से 25 से.मी. तक बढ़ चुका है।

तापमान इसी तरह बढ़ता गया, तो ग्लेशियरों के पिघलने तथा सागर-जल की गरमी से फैलने के कारण समुद्रों का जल स्तर काफी बढ़ जाएगा। इसके परिणाम भयानक होंगे। सागरतटों पर बसे शहरों के डूबने का खतरा पैदा हो जाएगा। महासागरों में स्थित तमाम द्वीप डूब जाएंगे। जलवायु परिवर्तन के कारण जलप्लावन की यह प्रक्रिया कई क्षेत्रों में शुरू भी हो चुकी है। हमारे देश के सुंदरवन क्षेत्र में

घोड़ामारा द्वीप का क्षेत्रफल पहले 22,4000 बीघा था जो अब केवल 5,000 बीघा रह गया है। उस 5,000 की आबादी वाले द्वीप में अब केवल लगभग 3,500 लोग रह रहे हैं। उन्हें मालूम है कि उनका यह द्वीप जल्दी ही डूब जाएगा।

जलवायु विज्ञानी बढ़ती वैश्विक तपन के कारण एक और खतरे की ओर संकेत कर रहे हैं। वह खतरा है भीषण समुद्री तूफान और घनघोर बारिश। विगत लगभग पचास वर्षों में वायुमंडल की तपन से सागरों का पानी भी गरमा गया है जिसके कारण सागरों से उठने वाली भाप की मात्रा में काफी इजाफा हुआ है। इस कारण तेज और भीषण समुद्री तूफानों की घटनाएं बढ़ रही हैं। इसके अलावा वर्षा का पैटर्न भी बदल गया है। मौसम, बेमौसम, कहीं भी, कभी भी घनघोर बारिश हो जाती है। कहीं भीषण गरमी पड़ रही होती है तो कहीं लंबे समय तक भारी बर्फबारी होने लगती है। इस कारण खेती पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है।

दोस्तो, समय हाथ से निकल रहा है। विश्व पर घिर रहे ग्लोबल वार्मिंग के इस महासंकट को रोकने के प्रयास अब हमें बढ़ाने होंगे। कल तुम्हारा है। तुम्हें इस प्यारी पृथ्वी पर हरियाली बढ़ानी होगी। जल, थल और वायुमंडल को साफ रखना होगा। प्रकृति से प्यार करना होगा, तभी यह प्यारी और निराली पृथ्वी रहने लायक रहेगी।

अपने भीतर के लेखक को उड़ने के लिए खुला आसमान दें

- अपनी रचना को दूसरों के सामने लाने के लिए, अपनी कहानी, कविता या लेख को पी.डी एफ. फार्मेट में किताब या पत्रिका के रूप में दुनिया के सामने लाएं।
- आप केवल लिखें। बाकी सब हम पर छोड़ दें।
- ब्लैक एंड ह्वाइट या रंगीन चित्र भी बनवाने की सुविधा है।
- संपादन में 25 वर्षों का अनुभव

संपर्क करें

अनिल जायसवाल
9810556533 7982014609
akjaiswal2592@gmail.com

ANIL JAISWAL
Jais Features
akjaiswal2592@gmail.com
9810556533
7982014609

हिंदी में किसी भी प्रकार की, खास तौर पर बच्चों के लिए प्रकाशन सामग्री या कार्य के लिए संपर्क करें. प्रूफ रीडिंग, संपादन, संकलन, टाइपिंग, मैगजीन सेटिंग, डिजाइनिंग, पी.डी. फार्मेट में पत्रिका या ई. पत्रिका निकालने की सुविधा भी उपलब्ध है.

नंदन बाल पत्रिका में संपादन का 25 वर्षों का अनुभव

बुरी लाइन

शाम ढल चुकी थी। बाजार बंद होने लगा था। कई दुकानों में इक्के-दुक्के ग्राहक नजर आ रहे थे। लेकिन एक दुकान के बाहर खरीदारों की भीड़ थी। लंबी लाइन लगी थी, लोग आगे बढ़ने के लिए धक्का-मुक्की कर रहे थे।

"पापा, यहां इतनी भीड़ क्यों! देखिए न, कितनी लंबी लाइन लगी है। क्या सामान बिकता है यहां?" रजत ने पिता भुवन से पूछा।

रजत अपने पिता के साथ मौसी के घर से लौट रहा था। दोनों रिक्शा में थे। रजत ने एक दुकान के बाहर भीड़ और लंबी लाइन देखकर आश्चर्य से पूछा था।

भुवन ने कहा, "यह एक बुरी लाइन है। अच्छे लोग इस लाइन में कभी खड़े नहीं होते। यहां शराब बिकती है। यहां न जाने कितने अविनाश और रंजीत जैसे लोग खड़े रहते हैं और उन पैसों से शराब खरीदते हैं, जिन्हें घर-परिवार और बच्चों पर खर्च होना चाहिए। इसी बुरी आदत के कारण ऐसे लोगों के घर वाले दुखी रहते हैं।"

"पापा, कौन हैं ये अविनाश और रंजीत?"

भुवन ने बेटे की बात का जवाब नहीं दिया। रिक्शा बाजार से गुजरकर घर के सामने रुक गई। अंदर जाकर भुवन रजत के बाबा विशाल से बातें करने लगे। पर रजत उसी बुरी लाइन के बारे में सोचता रहा, 'कैसे होते हैं शराब पीने वाले लोग?'

पिता के कहे नाम कानों में गूंजते रहे। कुछ देर बाद मौका पाकर उसने पिता से पूछा, "क्या आप अविनाश और रंजीत को जानते हैं?"

भुवन उस समय कुछ लिख रहे थे। बोले, "मैं किसी को नहीं जानता।" और फिर वह लिखने में व्यस्त हो गए।

भुवन ने जवाब दे दिया था, पर

चित्र : जय खोहवाल

रजत की तसल्ली नहीं हुई। वह सोच रहा था, 'जब पापा अविनाश और रंजीत को नहीं जानते, तो फिर उन्हें कैसे पता कि वे दोनों उस बुरी लाइन में खड़े थे?'

छुट्टियों के दिन थे, इसलिए रजत अपने बाबा विशाल के साथ सुबह बाग में घूमने चला जाता था। उस दिन वह बाग में दूसरे बच्चों के साथ खेल रहा था, तो उसने सुना, कोई अविनाश का नाम पुकार रहा था। रजत ने उस व्यक्ति की ओर देखा, जिसे अविनाश कहकर पुकारा गया था।

एक युवक कुछ बच्चों के बीच बैठा था। बच्चे खिलखिला रहे थे। 'तो यह है अविनाश, जिसके बारे में पापा ने बताया था'। सोचते हुए रजत उसके पास जाकर खड़ा हो गया।

"तुम्हारा नाम अविनाश है?"

"हां, मैं ही अविनाश हूं।"

"तो तुम उस बुरी लाइन में खड़े होते हो।"

"बुरी लाइन! यह क्या कह रहे हो तुम।" यह कहते हुए अविनाश उठकर रजत की ओर बढ़ा, तो रजत भागकर बाबा के पास चला आया, वह कुछ डर गया था।

अविनाश ने विशाल को नमस्कार किया। और पूछने लगा, "न जाने यह बच्चा किस बुरी लाइन की बात कर रहा है।"

"रजत, बुरी लाइन का क्या मतलब है?" विशाल ने पूछा।

"पापा कह रहे थे। और...।" रजत इतना ही कह पाया।

विशाल ने अविनाश से कहा, "माफ करना बेटा, शायद इसे खुद पता नहीं कि यह क्या कह रहा है।"

अविनाश फिर से हंसते-खिलखिलाते बच्चों के बीच चला गया। बाग से घर लौटते समय रजत ने बता दिया, जो कुछ भुवन ने बुरी लाइन के बारे में कहा था।

घर लौटने के बाद विशाल ने भुवन को बाग में हुई घटना के बारे में बताया और पूछने लगे, "यह बुरी लाइन का क्या चक्कर है? और तुम अविनाश और रंजीत को कैसे जानते हो?"

भुवन ने कहा, "पिताजी। एक दिन मैं बाजार से गुजर रहा था। वहां मैंने देखा कि पुलिस वाले दो युवकों को पकड़कर ले जा रहे थे। वहां जमा लोग कह रहे थे कि ये दोनों अविनाश और रंजीत चोर हैं। ये लोगों को परेशान करते हैं। इन दोनों को कड़ी सजा मिलनी चाहिए।"

"तो तुम अविनाश और रंजीत को नहीं जानते।"

"जी नहीं। मैंने तो पहली बार उन दोनों को पुलिस के साथ देखा था।" भुवन ने कहा।

विशाल ने कहा, "क्या तुम जानते हो कि शराब की दुकान के बाहर लगी लाइन की चर्चा करते हुए तुमने अविनाश और रंजीत के नाम लिए थे, रजत के सामने। इस कारण रजत के कोमल मन ने अविनाश के नाम को ही बुरा मान लिया है। आज बाग में जो कुछ हुआ, वह ठीक नहीं था।"

भुवन को महसूस हुआ कि उनसे बड़ी भूल हो गई, उसे तुरंत सुधारना चाहिए।

अगली सुबह भुवन पिता और रजत के साथ बाग में गए। पिछली सुबह की तरह अविनाश आज भी बच्चों के बीच बैठा था। वह बच्चा टोली को एक कहानी सुना रहा था। अविनाश पेशे से अध्यापक था और बच्चों के लिए कहानियां लिखता था। भुवन ने कुछ सोचा और बच्चा टोली के पास जाकर बैठ गए। कहानी पूरी हुई, तो भुवन उठकर अविनाश के पास आ गया।

भुवन ने कहा, "कल मेरे बेटे ने आपसे बहुत गलत व्यवहार किया। मैं उसके लिए क्षमा मांगता हूं और फिर शराब की दूकान के बाहर लगी लाइन के बारे में बताया, तो अविनाश हंस पड़ा।

"अब मैं पूरी बात समझ गया हूं। बच्चों का कोमल मन हर अच्छी बुरी बात को झट ग्रहण कर लेता है। रजत ने यही समझ लिया है कि हर अविनाश और रंजीत बुरे होते हैं, खैर जो कुछ हुआ, उसे भूल जाइए।"

अब भुवन को मौका मिला। बोले, "अगर आप सचमुच उसकी बात को भूल चुके हैं तो कल दोपहर की चाय हमारे साथ पीजिए और आपको सपरिवार आना है।"

अविनाश ने तुरंत हामी भर दी। अगले दिन वह पत्नी लता और बेटे तरल के साथ आ गया। उसने बच्चों की कहानियों की नई किताब रजत को दी। रजत और तरल में झट दोस्ती हो गई। विदा लेते समय अविनाश ने रजत से कहा, "अब तुम्हारी बारी है। मेरे पास बच्चों की किताबों की बड़ी लाइब्रेरी है,'

रजत ने कहा, "अंकल, हम सब जरूर आएंगे। इतनी ही देर में मैं और तरल दोस्त बन गए हैं।"

एक बुरी घटना ने नई दोस्ती को जन्म दे दिया था। ✪

अपने लेखक को जानिए

देवेंद्र कुमार : बच्चों की प्रसिद्ध पत्रिका नंदन में सहायक संपादक रहे। बच्चों के लिए कहानियां अपने आसपास के परिवेश से उठाते हैं। कहानीकार तो अच्छे हैं ही, कविताएं भी लिखते हैं। अन्य भाषाओं से कहानियों को हिंदी में प्रस्तुत करने में महारत। हजारों विदेशी कहानियों से बच्चों को परिचित करवाया।

अंग्रेजी का ट्यूशन

सेठ करोड़ीमल अपने बेटे राजू की पढ़ाई को लेकर बहुत चिंतित रहा करते थे। उनका सपना था कि उनका बेटा उनकी तरह दुकान पर बैठकर नमक, तेल, मिर्च-मसाला न बेचे, बल्कि बहुत बड़ा अफसर बने। उन्होंने सुन रखा था कि आज के जमाने में अंग्रेजी की जानकारी के बगैर कोई भी बड़ा आदमी बन ही नहीं सकता। इसीलिए वह अपने बेटे को शहर के प्रसिद्ध अंग्रेजी स्कूल में पढ़ा रहे थे।

राजू की अर्द्धवार्षिक परीक्षा का रिपोर्ट कार्ड देखकर सेठजी परेशान हो उठे। कारण कि अंग्रेजी में उसके बहुत ही खराब अंक आए थे। अब हर हाल में उन्हें राजू की अंग्रेजी ठीक करानी थी क्योंकि उनकी सोच के अनुसार अंग्रेजी के ज्ञान के बगैर वह बड़ा अधिकारी बन ही नहीं सकता था।

काफी सोच-विचार के बाद सेठजी ने अपने बेटे के लिए अंग्रेजी का ट्यूटर रखने का निर्णय किया। वह अब एक ऐसे अध्यापक की तलाश में लग गए, जो रोज शाम घर आकर उनके बेटे को अंग्रेजी पढ़ा दिया करे। अपने सारे मिलने-जुलने वालों से उन्होंने अंग्रेजी के ट्यूटर के लिए कह रखा था। जब लोगों को पता चला कि सेठजी को अंग्रेजी के अध्यापक की जरूरत है, तो ट्यूशन करने वाले अध्यापक भी आने लगे।

जो भी ट्यूटर आता, सेठजी उससे फीस को लेकर मोल-तोल करने लगते थे।

"सेठजी, मैं बी.ए. पास बेरोजगार हूं और आपके बेटे को ट्यूशन पढ़ाने के लिए बात करने आया हूं।" एक दिन एक युवक सेठजी की दुकान पर आकर बोला।

"हां, तो रोज एक घंटा अंग्रेजी पढ़ाने का कितना पैसा लोगे तुम?" सेठजी ने उस युवक को ऊपर से नीचे तक देखते हुए पूछा।

"जी, तीन हजार रुपया महीना।" युवक ने उत्तर दिया।

"तीन हजार? बाप रे! लूट मची है क्या? रुपए कहीं पेड़ पर उगते हैं

चित्र : इंदिरा

क्या कि एक घंटा पढ़ाने का मैं तुम्हें तीन हजार दे दूं। पांच सौ रुपए महीना में पढ़ाना हो, तो पढ़ाओ वरना अपना रास्ता देखो।” तीन हजार की बात सुनते ही सेठजी हत्थे से उखड़ गए। वह युवक लौट गया।

अगले दिन एक दूसरे सज्जन आए। उन्होंने सेठजी से कहा, “सेठजी, मैने सुना है, आपको एक अंग्रेजी टीचर की तलाश है।”

“हां, अपने बेटे को पढ़ाने के लिए मुझे एक अंग्रेजी टीचर की जरूरत तो है, लेकिन अपनी फीस की बात पहले ही कर लो। बाद की चिकचिक मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है।” सेठजी बोले।

“जी, आप महीने के ढाई हजार रुपए दे दीजिएगा।”

“क्या कहा ढाई हजार? ढाई हजार रुपए तो पांच महीने में दूंगा मैं। पांच सौ रुपए महीना में पढ़ाना हो, तो आज ही से शुरू कर दो, वरना तुम्हारी मर्जी। टीचरों की कमी नहीं है कोई। गली-गली जाने कितने पढ़े-लिखे बेकार घूम रहे हैं।” सेठजी ने कहा और ग्राहकों के सौदे का हिसाब करने लगे।

वैसे तो सेठजी करोड़ों के मालिक थे, शहर के चौक बाजार में बड़ा सा जनरल स्टोर था उनका, लेकिन पैसा खर्च करने के मामले में वे नंबर एक के कंजूस थे। सारी उम्र दुकान पर मोल-तोल करते रहने के कारण उनकी हर चीज में मोल-तोल करने की आदत सी पड़ गई थी। जो भी अध्यापक ट्यूशन के लिए बात करने आता, उससे पैसों को लेकर वह इतना मोल-तोल करते इतना मोल-तोल करते कि सामने वाला हाथ जोड़ देता और वापस लौट जाता था।

इस प्रकार कई लोग ट्यूशन पढ़ाने के लिए आए, लेकिन सेठजी पांच सौ रुपए महीना से अधिक देने को तैयार नहीं हुए। धीरे-धीरे यह बात पूरे शहर में फैल गई कि सेठजी को अपने बेटे के लिए अंग्रेजी के एक ट्यूटर की जरूरत है और यह भी कि वे ट्यूशन फीस पांच सौ रुपए महीना से अधिक देने को तैयार नहीं हैं। इतने कम पैसों में भला कौन पढ़ाता, सो उनके यहां लोगों का आना-जाना बंद हो गया।

कुछ दिनों के बाद एक शाम को सेठजी अपनी दुकानदारी में व्यस्त थे कि तभी एक सज्जन दुकान पर आए और सेठ जी को नमस्कार करने के बाद बोले, “मेरा नाम डॉ. सक्सेना है। मैं यहां राजकीय इंटर कालेज में अंग्रेजी का अध्यापक हूं। मैं आपके बेटे को ट्यूशन पढ़ाने को तैयार हूं।”

“श्रीमान जी, आप पैसे कितने लेंगे?” सेठजी ने उन्हें ऊपर से नीचे तक ध्यान से देखने के बाद प्रश्न किया।

“अजी, पैसे की क्या बात है सेठजी? आप जो दे देंगे, वही ले लूंगा। मुझे तो बस पढ़ाने से मतलब है।” सक्सेना जी ने कहा।

सेठ जी बहुत चकित हुए कि यह कैसा आदमी है, जो पैसे की बात ही नहीं कर रहा है। फिर कुछ सोचकर सेठजी बोले, “देखिए, महाशय, वैसे तो मैं पांच सौ रुपया महीना देने को था। लेकिन चलिए, आपको छह सौ रुपया दे दूंगा महीने के।”

“ठीक है, मुझे स्वीकार है। मैं कल शाम से पढ़ाने आ जाऊंगा।” सक्सेना जी ने कहा और लौट गए।

सेठजी मन जी मन बेहद खुश थे कि इतने सस्ते में उन्हें अंग्रेजी पढ़ाने वाला अध्यापक मिल गया। वह भी इंटर कालेज का लेक्चरर। अब तो निश्चित ही उनका बेटा अंग्रेजी में काफी तेज हो जाएगा।

अपने लेखक को जानिए

अखिलेश श्रीवास्तव चमन : उ.प्र. सरकार में एडीशनल आई. जी. (रजि.) के पद से सेवानिवृत्त। बाल उपन्यास, बालकहानी संकलन, बालकविता संकलन, एक बाल एकांकी संकलन, समीक्षात्मक लेखों तथा यात्रा संस्मरण की कुल 29 पुस्तकें प्रकाशित। भारतेन्दु हरिश्चंद्र पुरस्कार सहित दो दर्जन पुरस्कारों से सम्मानित। 'समकालीन त्रिवेणी' का संपादन।

ट्यूशन पढ़ाने पहले दिन आए, तो सक्सेना जी ने सेठजी के बेटे अमन को अंग्रेजी के कुछ शब्दों के अर्थ लिखवाए और अगले दिन उसे रटकर तैयार रखने को कहकर लौट गए।

सेठ जी रात को दुकान बंद कर के घर आए, तो देखा, उनका बेटा अमन जोर-जोर से बोलकर अंग्रेजी की वर्डमीनिंग याद कर रहा था।

‘ब्रेकफास्ट’ माने तेजी से तोड़ना। ‘लेडीफिंगर’ माने औरत की उंगुली। ‘बटरफ्लाई’ माने मक्खन का उड़ना। ‘मैंगो’ माने आदमी का जाना। ‘रेनबो’ माने बरसात का झुकना। ‘कारपेंटर’ माने कार को पेंट करने वाला। ‘अंडरस्टैंड’ माने नीचे खड़ा होना। ‘ग्रैंडफादर’ माने शानदार बाप। ‘ग्रैंडमदर’ माने शानदार मां।’

बेटे का रटना सुना, तो सेठजी चौंक पड़े। थोड़ी-बहुत अंग्रेजी तो आती ही थी उनको। वह बेटे पर बिगड़ पड़े, “अरे! यह क्या उलटा-पुलटा याद कर रहा है तू? यह सब गलत मीनिंग किसने लिखाया तुम्हें।”

"ट्यूशन पढ़ाने वाले मास्टर जी ने लिखाया है। और कह गए हैं कि कल आते ही पहले इसे ही सुनेंगे। इसीलिए याद कर रहा हूं।" अमन ने बताया।

"अच्छा रहने दे। तू मत याद कर। यह गलत-सलत बात। कल तुम्हारे मास्टर की खबर लूंगा मैं।" सेठजी ने अपने बेटे से कहा।

अगले दिन सेठजी गुस्से में भरे बैठे थे। सक्सेना जी के आते ही उन पर बरस पड़े, "ऐ मास्टर! तुमने तो बताया था कि तुम अंग्रेजी में इंटर कालेज में पढ़ाते हो। लेकिन तुम्हें इतना भी नहीं पता कि मैंगो माने आम होता है, बटरफ्लाई माने तितली होती है कारपेंटर बढ़ई को कहते हैं और ब्रेकफास्ट माने सुबह का नाश्ता होता है।"

"अपने बारे में मैंने कुछ भी गलत नहीं बताया था सेठजी। मैं सचमुच अंग्रेजी में इंटर कालेज में अध्यापक हूं। मुझे इन सभी शब्दों के सही मीनिंग भी मालूम है।"

"तो फिर मेरे बेटे को उलटा-पुलटा मीनिंग क्यों लिखाया है?"

"बहुत सामान्य सी बात है सेठजी। जैसी मजदूरी होगी, काम भी वैसा ही तो होगा न। आप की दुकान में तो हर प्रकार का सामान रखा है, लेकिन आप भी अपने ग्राहकों को वैसा ही सामान तो देते हैं जितना वे पैसा देते हैं। साधारण चावल के पैसे देने वाले को आप बासमती चावल तो नहीं तौल देंगे न। वनस्पति का दाम देने वाले को आप देशी घी तो नहीं देंगे न। यही बात मेरे साथ भी है। आपको समझाने के लिए ही पांच सौ रुपए महीना ट्यूशन फीस में तो ब्रेकफास्ट माने तेजी से तोड़ना, बटरफ्लाई माने मक्खन का उड़ना और ग्रेंडफादर माने शानदार बाप ही होगा। बटरफ्लाई माने तितली और ब्रेकफास्ट माने सुबह का नाश्ता तो तभी हो पाएगा, जब आप ट्यूशन फीस तीन हजार रुपए महीना देंगे। यह सब तो मैंने आप तक अपनी बात पहुंचाने के लिए किया था। अब आप तय कीजिए, कि आपके बेटे को पढ़ाऊं या कहिए तो मैं वापस चला जाऊं। इतने कम पैसे में कोई आपके बेटे को मन से नहीं पढ़ा सकता और पैसे कम मिलने पर कोई लापरवाही से अमन को पढ़ाएगा, तो अमन को नुकसान होगा।" सक्सेना जी ने कहा।

"नहीं-नहीं मास्टर जी आप वापस मत जाइए। मेरे बेटे को खूब अच्छी तरह से पढ़ाइए। मैं समझ गया। मैं तीन हजार रुपए महीना देने को तैयार हूं।" सेठजी बोले।

सक्सेना जी की बात उनकी समझ में आ गई थी।

अप्रैल की महिमा

क्यों मनाते हैं अप्रैल फूल

अनिल जायसवाल

जब भी हम अप्रैल महीने की बात करते हैं, तो सबसे पहले अप्रैल फूल की याद आती है। महीने के इस प्रथम दिन पर लोग एक -दूसरे को मूर्ख बनाने का प्रयास करते हैं और यदि इसमें सफलता मिल जाती है, तो कहते हैं 'अप्रैल फूल'।

पर ऐसा नहीं है कि इस महीने को केवल इसी बात के लिए याद किया जाए। तो चलिए, आपको आज अप्रैल का इतिहास बताते हैं।

अंग्रेजी के कैलेंडर के अनुसार हर बार वर्ष का चौथा महीना अप्रैल होता है। यह हमेशा तीस दिनों का होता है। एक खास बात यह है कि हर वर्ष अप्रैल और जुलाई का महीना एक जैसा होता हैं। बस जुलाई में एक दिन ज्यादा होता है।

सभी रोमन महीने किसी न किसी भगवान के नाम पर रखे गए हैं। अप्रैल भी उनके देवता वीनस के नाम से जुड़ा है। वीनस का ग्रीक नाम अप्रोडाइट भी है। मान्यता है कि यही नाम बदलते-बदलते अप्रैल हो गया। शुरू के दिनों में रोमन कैलेंडर में अप्रैल साल का दूसरा महीना होता था। इसमें दिन भी 29 होते थे। जूलियस सीजर ने ईसा से 45 वर्ष पूर्व जब कैलेंडर को नया रूप दिया, तो अप्रैल के महीने में तीस दिन कर दिया गया।

अब इस अप्रैल के महीने के प्रथम दिन को अप्रैल फूल के रूप में कब और कैसे मनाया जाने लगा, यह कहना मुश्किल है। कहने वाले यह भी कहते थे कि इसकी शुरुआत फ्रांस में हुई। वहां नए साल को आठ दिनों तक मनाने का रिवाज था। यह उत्सव 25 मार्च से आरंभ होकर अप्रैल महीने के प्रथम दिन तक चलता था। 1582 में पोप ग्रेगरी 12वें ने नया ग्रेगेरियन कैलेंडर बनाया। इसमें बदलाव करके जनवरी से नए वर्ष की शुरुआत मानी गई। कई लोगों का कहना है कि चूंकि साल का आरंभ बदल दिया था, इसलिए कई पुराने लोगों को इस बदलाव का पता ही नहीं चला। वे मार्च को ही नए साल के रूप में मनाते रहे। नए साल का उत्सव वे अगले महीने के पहले दिन को समाप्त करते थे। ऐसे लोगों को बाकी लोग बाद में असलियत बताते थे, तब वे बहुत शर्मिंदा होते थे। इसी को लोग अप्रैल फूल कहने लगे। इस तरह के मजे ने बाद में परंपरा का रूप ले लिया और इस तरह अप्रैल फूल मनाया जाना शुरू हो गया। हालांकि आज भी किसी भी

कैलेंडर में अप्रैल के पहले दिन को 'अप्रैल फूल डे' नहीं लिखा जाता। हाल यह है कि अब तो यदि कोई एक अप्रैल को पैदा हुआ हो, तो वह इसे छिपाने का प्रयास करता है, ताकि हंसी का पात्र न बन जाए।

हर देश में इसे मनाने का अपना एक अलग तरीका है। उदाहरण के लिए अमेरिका में लोग अपने दोस्तों के साथ छोटे-मोटे मजे कर इस दिन को मनाते हैं, जबकि फ्रांस में बच्चे आम तौर पर इस दिन कागज

की मछली बनाकर अपने मित्रों की पीठ पर चुपचाप चिपका देते हैं। जब बच्चे को इसका पता चला जाता है तो बाकी बच्चे मिलकर कहते हैं 'अप्रैल फिश'।

पेरू में भी ऐसा ही कुछ होता है। लोग हंसी मजाक करते हुए चुपचाप दूसरे की पीठ पर एक डॉल टांग देते हैं, जिसे देख लोग उसका मजाक उड़ाते हैं, पर वह समझ नहीं पाता कि लोग हंस क्यों रहे हैं।

इंग्लैंड में इस दिन को प्रातः ही मनाया जाता है। जो इसका शिकार बन जाता है, उसे 'नूडल्स' कहते हैं। स्काटलैंड में मूर्ख दिवस लगातार दो दिनों तक धूमधाम से मनाया जाता है। मैक्सिको में मूर्ख दिवस मनाया तो जाता है, पर उसका संबंध अप्रैल माह से नहीं है। वहां मूर्ख दिवस 28 दिसंबर को मनाया जाता है।

अमेरिका के सन फ्रांसिस्को और कैलिफोर्निया में इस दिन भव्य जुलूस निकलता है। इस दिन लोग दुनिया के नेताओं और उनकी गलत नीतियों का मजाक उड़ाने के लिए उन्हीं की तरह वेश बनाते हैं।

ब्राजील में अप्रैल फूल डे को 'डिया डी मेनटीरा' कहते हैं। इस

डेजी नाम का फूल अप्रैल महीने का फूल तो हीरा है, इस महीने का बर्थ स्टोन।

दिन सब एक-दूसरे से झूठ बोलकर हंसी मजाक करते हैं। दूसरे से मजाक करके मजे करते हैं। ब्राजील वाले मानते हैं कि इस जग के दुख दर्द को दूर करने कर लिए ऐसे झूठ बोलने और मजाक करने में कोई बुराई नहीं है।

कई विद्वानों ने अप्रैल फूल मनाने के पीछे किसी तर्क को न मानते हुए उसे सहज रूप से हंसने का एक बहाना मानते हैं। प्रसिद्ध लेखक मार्क ट्वाइन का कहना है, "अप्रैल फूल का दिन हमें बता देता है कि आने वाले 364 दिन हम क्या होंगे।"

अप्रैल के वीर

◆ एक अप्रैल को जन्म लेने वालों में डाक्टर विलियम हार्वे का नाम बहुत प्रसिद्ध है। उनका जन्म 1 अप्रैल 1578 को हुआ था। खून की जांच के कार्य की शुरुआत उन्होंने ही की थी।

◆ बच्चों के प्रसिद्ध लेखक हैंस क्रिश्चियन एंडरसन जीवन भर के लिए अप्रैल फूल का ताना सुनने से बाल-बाल बचे। उनका जन्म हुआ 2 अप्रैल 1805 को।

अप्रैल में पैदा होने वाले कुछ बड़े नाम हैं-

◆ अभिनेता मर्लोन ब्रांडो (3 अप्रैल 1924)

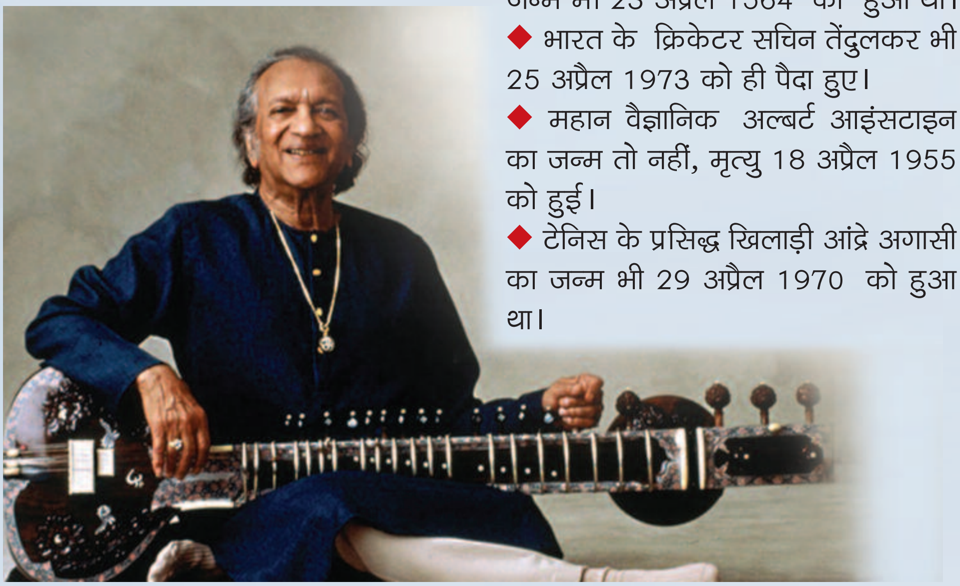

◆ कवि विलियम वर्ड्सवर्थ (7 अप्रैल 1770)

◆ सितारवादक पंडित रविशंकर (7 अप्रैल 1920)

◆ बाबा साहब भीमराव अंबेडकर (14 अप्रैल 1891)

◆ चार्ली चैप्लिन (16 अप्रैल 1889)

◆ प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री फ्रेडरिक फ्रॉयबल (21 अप्रैल 1782)। उन्होंने ही बच्चों की पढ़ाई के लिए किंडर गार्डन की शुरुआत की थी, जिसे आज हर स्कूल में केजी के रूप में जाना जाता है।

◆ नाटककार विलियम शेक्सपीयर का जन्म भी 23 अप्रैल 1564 को हुआ था।

◆ भारत के क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर भी 25 अप्रैल 1973 को ही पैदा हुए।

◆ महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंसटाइन का जन्म तो नहीं, मृत्यु 18 अप्रैल 1955 को हुई।

◆ टेनिस के प्रसिद्ध खिलाड़ी आंद्रे अगासी का जन्म भी 29 अप्रैल 1970 को हुआ था।

अप्रैल महीने के साथ कुछ बुरी यादें भी जुड़ी हैं

◆ अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन को 14 अप्रैल को ही गोली मारी गई थी।

◆ 18 अप्रैल 1906 को सन फ्रांसिस्को में प्रसिद्ध भूकंप आया था।

◆ प्रसिद्ध पानी जहाज टाइटेनिक ने 14 अप्रैल 1912 को ही जल समाधि ली थी।

◆ रूस में चेर्नोबिल परमाणु केंद्र में दुर्घटना 26 अप्रैल 1986 को हुई थी।

◆ बोसनिया का गृहयुद्ध प्रथम अप्रैल 1992 को आरंभ हुआ था।

गलती बंट गई

बब्बू उछलता कूदता घर में घुसा था। उसकी खुशी देखकर घर में सब समझ गए थे कि आज वह गली में खेले जाने वाले क्रिकेट में कुछ जीत कर आया है। हो सकता है, उसने खूब रन बनाए होंगे, किसी अच्छे खिलाड़ी को आउट किया होगा, या ऐसा ही कुछ और। बस, अभी पता चल जाएगा। वह खेल की सारी कहानी सुनाएगा, रोज की तरह।

वह कुछ बोले, इससे पहले ही उसकी मम्मी ने कहा, "खेलकर आए हो, इसलिए घर में आते ही हाथ साबुन से साफ करोगे, यह तो मुझे पता है। पर पहले मेरा एक काम करो। किचन में जाओ। वहां सब्जी के छिलकों से भरा एक पॉलीथिन है। वे छिलके गली में घूमने वाले किसी गाय या सांड को खिला आओ। इतने मैं तुम्हारे लिए एक अच्छी सी डिश बनाती हूं।"

चित्र : जय खोहवाल

बब्बू ऐसे काम फौरन कर देता है। उसने छिलके से भरा पॉलीथिन उठाया और घर से निकल गया। रोज तो वह जल्दी ही वापिस आ जाता है। आज देर से आया। उदास, गुमसुम और थोड़ा डरा हुआ भी। उसकी यह हालत देखकर मम्मी घबरा गई। उन्होंने कई बार पूछा, पर बब्बू ने कुछ नहीं बताया। बब्बू को उसकी पसंद की मिठाई भी दी गई। पर वह खुश नहीं हुआ।

शाम के पांच बज गए थे। बब्बू के पापा भी घर आ गए। बब्बू की इस हालत के बारे में बताया, तो बोल, "तुम उसकी मां हो, तुम्हीं उससे उगलवा सकती हो कि क्या हुआ। हो सकता है, गली में घूमने वाले पशुओं में से किसी ने उसे चोट पहुंचाई हो। मैंने तो तुम्हें कई बार कहा है कि इनसे दूर रहना चाहिए।

मम्मी की काफी कोशिश के बाद बब्बू बोला, "आज मुझसे एक गलती हो गई। आपने छिलके फेंकने के लिए दिए थे। एक सांड के सामने उन छिलकों को मैं डालने वाला था कि उसने पॉलीथिन मुझसे छीन लिया। छिलकों को पॉलीथिन सहित मुंह के अंदर ले गया। मैंने उसे काफी देर तक देखा, पर पॉलीथिन बाहर नहीं आया, शायद उसके पेट में चला गया। मैंने बहुत बड़ी गलती की।"

"हां बेटे, गलती तो हो गई। पेट में गया पॉलीथिन नुकसान ही करता है। पर अब हम क्या कर सकते हैं। इस बात पर अब तुम दुखी होना बंद कर दो, क्योंकि सारी गलती तुम्हारी नहीं है। मेरी भी गलती है। मुझे वे छिलके उस पॉलीथिन में डालने ही नहीं चाहिए थे। किसी बर्तन में डालती तो, ऐसा न होता। बंट गई न गलती हम दोनों के बीच। अब खुश हो जाओ।"

बब्बू कुछ बोले, उससे पहले ही पापा वहां आ गए। बोले, "गलती बंट रही है, उसमें मेरा भी हिस्सा है। वह पॉलीथिन घर में मैं ही तो लाया था। अगर घर से कपड़े का थैला लेकर जाता, तो सब्जी उसमें आती और पॉलीथिन घर में नहीं आता। इसलिए यह मानो कि गलती तीन जगह बंट गई है।"

बब्बू कुछ बोलने को हुआ कि दादीजी वहां आ गईं। बोलीं, "गलती तीन जगह नहीं, चार जगह बंटेगी। चौथी हिस्सेदार मैं। पहले मैं कपड़े के थैले बनाकर घर में कई जगह रखती थी। जब से यह पॉलीथिन चला है, मैंने थैले बनाने बंद कर दिए। अब मैं थैले बनाना फिर शुरू करूंगी, ताकि पॉलीथिन घर में आए ही नहीं।"

"लो बब्बू, तुम्हारे हिस्से में तो थोड़ी सी गलती बची है। खुश हो जाओ, जो पसंद हो, वह खाओ और स्टडी टेबल की तरफ बढ़ जाओ। अब इस गलती का अफसोस मत करना।

"कहां बची है, गलती? गलती तो खत्म हो गई। यदि हमसे अनजाने में कोई गलती हो जाए या हम मान लें कि हमसे गलती हुई और सोच लें कि आगे से ऐसी गलती नहीं करेंगे, तो गलती रहती ही नहीं।" यह कहा दादा जी ने, तो बब्बू मुसकरा दिया।

मुसकराते बब्बू को देखकर सबने संतोष की सांस ली। अब बब्बू खुश था और गली में हुए क्रिकेट मैच की कहानी सुनाने को तैयार था। ✪

अपने लेखक को जानिए

गोविंद शर्मा : बालकथा, लघुकथा, व्यंग्य विधाओं में 1971 से लेखन। अब तक बालसाहित्य की 36, लघुकथा की चार, व्यंग्य की दो सहित कुल 47 पुस्तकें प्रकाशित। भारतेंदु, राजस्थान साहित्य अकादमी, केंद्रीय साहित्य अकादमी सहित लगभग 100 पुरस्कार, सम्मान प्राप्त।

अपना योगदान दें

पायस बच्चों को ध्यान में रखकर पायस का प्रकाशन रंगीन चित्रों के साथ आप सबके सहयोग से हो पा रहा है।

**रचना ही नहीं,
आर्थिक योगदान देकर भी
इस प्रयास में सहयोगी बनें**

बचा लो पृथ्वी को

अनिल जायसवाल

आज पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, जो इसके वातावरण में बदलाव ला रहा है। यह बदलाव पृथ्वी पर रहने वाले लोगों के लिए ठीक नहीं। दरअसल जब हम कोयला और अन्य जीवाश्म से प्राप्त ईंधन को जलाते हैं, तब कार्बन डाई ऑक्साइड सहित कई ऐसी गैस वातावरण में घुलती हैं, जो ओजोन की परत को कमजोर करने में सक्षम हैं। हम अपने खान-पान और रहन-सहन में कुछ बदलाव करके पृथ्वी के वातावरण को ठीक रखने में मदद कर सकते हैं।

थिंक ग्रीन

कागज का प्रयोग बच्चों से ज्यादा अब ऑफिस में करते हैं। किताब से लेकर लिखने के लिए कॉपी तक के लिए कागज का प्रयोग होता है। पर ये तो मजबूरी है। परंतु आजकल एक नया फैशन हो गया है फोटोकॉपी कराने और प्रिंट लेने का। कोई भी काम हो, पहले फोटोकॉपी कराकर रख लेते हैं कि बाद में काम आएगा। ऐसा करने में काफी कागज बर्बाद होता है। कागज बनाने के लिए पेड़ों का कटाव होता है। पेड़ों के कटाव से ऑक्सीजन बनने की मात्रा कम हो जाती है। लापरवाही इतनी है कि पेपरलेस ऑफिस में भी पेपर पर धड़ल्ले से काम होता है। यहां हमें कोरोना का शुक्रगुजार होना चाहिए कि उसके डर से 2020-2021 में अधिकांश काम घर से हुए और कागज का इतना कम प्रयोग हुआ कि करोड़ों पेड़ कम कटे और वातावरण में सुधार देखने को मिला।

बिजली बचाओ

बिजली का प्रयोग भी अगर हम ठीक से करें, तो पृथ्वी को हरा-भरा रखने में मदद कर सकते हैं। इसके लिए हम पढ़ते समय प्राकृतिक रोशनी का प्रयोग कर सकते हैं। एयरकंडीशन के बदले कूलर या पंखे का प्रयोग करने पर जोर दे

सकते हैं। ओजोन की परत को कमजोर करने में एयरकंडीशन और फ्रिज की बहुत बड़ी भूमिका है। एयरकंडीशन में प्रयोग होने वाली गैस फ्रियान ओजोन के लिए बहुत हानिकारक है। कहते हैं कि इन गैसों का एक अणु ओजोन के लाखों अणुओं को नष्ट कर देता है। हम चाहें, तो बीच-बीच में फ्रिज को ऑफ करके बिजली भी बचा सकते हैं।

सामान की बर्बादी रोको

अपने सामान का हम इस तरह प्रयोग कर सकते हैं कि उनका फिर से उपयोग किया जा सके। एक पेंसिल होते हुए दूसरी को ले लेना चीज की बर्बादी तो है ही, साथ ही पर्यावरण के लिए भी हानिकारक है। जो चीज तुम खराब करते हो, उसके बदले एक नई चीज बनाई जाती है जो पैसे और उर्जा की भी बर्बादी है।

हर चीज को बनाने के लिए उर्जा लगती है। जितना हम सामान बचाएंगे, उतनी ही ऊर्जा की बचत होगी जो पृथ्वी के लिए अच्छा है।

नई चीज कम लो

देखा जाता है कि एक घर में दो भाई बहन हैं, तो दोनों के लिए अलग-अलग साइकिल है। साइकिल पुरानी पड़ते ही नई साइकिल की डिमांड शुरू हो जाती है। जब पुराना सामान कबाड़ में जाएगा, तो वह प्रदूषण का कारण बनेगा। इसलिए किसी सामान को जितना चला सकते हो, चलाओ। इस तरह भी तुम पर्यावरण को ठीक रखने में मदद कर सकते हो।

पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ

पेड़ का वातावरण से बहुत गहरा संबंध है। हो सके, तो अपने घर में पेड़-पौधे लगाओ और उनकी देखभाल करो। कहा जाता है कि एक बढ़िया से खिला पेड़ एक परिवार के लिए ऑक्सीजन का प्रबंध कर देता है। तुम्हारे घर के आसपास अगर कोई पेड़ है, तो उसकी देखभाल करो। उसे हर रोज पानी दो। अधिकांश पेड़-पैधे पानी की कमी से ही खत्म हो जाते हैं।

गो ग्रीन की बात करो

बहुत लोग अब तक गो ग्रीन की बात क्यों की जाती है, उसका अर्थ ही नहीं जानते हैं। वे समझ नहीं पाते कि अपने को थोड़ा व्यवस्थित कर, वे कितना कुछ बचाकर पृथ्वी को हरा-भरा रखने में सहयोग दे सकते हैं। तुम लोग गो ग्रीन की बात लोगों तक पहुंचाओ और उन्हें समझाओ कि वे भी पृथ्वी को बचाने में सहयोग कर सकते हैं।

खाना की आदत

जो लोकल हो यानी स्थानीय हो, उनको खाने की आदत डालो। यानी तुम्हारे इलाके में जो सब्जियां होती हैं, उन्हें खाओ। बेमौसम की सब्जियों को दूर-दूर से ट्रांसपोर्टेशन करके पहुंचाया जाता है जिसमें ईंधन के साथ साथ अन्य साधन भी खर्च होते हैं।

प्राकृतिक खाना खाने का आदत डालो। जैसे ब्रेड के बदले रोटी खाकर हम काफी उर्जा बचा सकते हैं क्योंकि रोटी वाले आटे से ही ब्रेड बनाया जाता है जिसे कई चरणों में प्रोसेस करके बनाया जाता है जिसमें मशीन, उन्हें बनने से लेकर ट्रांसपोर्टेशन तक अलग-अलग चरणों में ऊर्जा की खपत होती है। जितनी जरूरत हो, उतना खाओ। खाने को खराब मत करो। बचे हुए खाने से लाखों लोगों की भूख मिटाई जा सकती है। साथ ही अतिरिक्त सामान बनाने और पैदा करने में ऊर्जा खर्च करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। शाकाहारी बनकर भी हम धरती को स्वस्थ रखने में मदद कर सकते हैं।

प्रदूषण रोको

जब भी पापा-मम्मी के साथ वाहन पर निकलते हो, तो नजर रखो कि वे ट्रैफिक रूल्स का ध्यान रख रहे हैं या नहीं। रेड साइट पर उन्हें समझाओ कि गाड़ी बंद कर दें। इंजन स्टार्ट रहने पर ध्वनि प्रदूषण के साथ-साथ वायु प्रदूषण भी होता है। हॉर्न बजाने से भी रोको।

याद रहे, जब हम अतिरिक्त सुविधा प्राप्त करने की सोचते हैं, तो उसकी कीमत हम पर्यावरण को बिगाड़कर चुकाते हैं। इसलिए अगर हम खुद को थोड़ा सा बदले और लोगों को भी समझाकर गलत करने से रोकें, तो यह पृथ्वी के बचाने में हमारा सहयोग होगा।

जंगल मे फटफटिया

जंगल में नई बनी सड़क से जब भी कोई फटफटिया सवार गुजरता, तो जंगली जानवरों की आंखे चौड़ी हो जातीं, दिल धाड़-धाड़ करके बजने लगता। शुरू में तो सभी डर के मारे सड़क से बहुत दूर भाग जाते या झाड़ियों और पेड़ों की आड़ में छुप जाते। जब फटफटिया दूर निकल जाती, तभी राहत की सांस लेते। लेकिन धीरे-धीरे जब डर कुछ कम होने लगा, तो सब आपस मे जुटकर उसके बारे मे चर्चा करने लगे।

"अरे बाप रे! कितना शोर मचाते हुए जाती है। बड़ा डर लगता है। पहले इसी तरह जानवर मारने वाले शिकारी ढोल-ताशा पीटते हुए आते थे।" हाथी दादा ने अपना अनुभव बताते हुए कहा।

"हां भाई, इतना डर तो शेर सिंह की दहाड़ से भी नहीं लगता।" मीकू हिरन ने अपनी बात रखी।

"अरे, इससे तो शेर सिंह की भी हालत पतली हो जाती होगी।" हंसी मजाक के लिए मशहूर चिंटू गोरिल्ले की बात पर उपस्थित जानवरों की दबे मुंह हंसी छूट गई।

"ही-ही, ही-ही पेड़ पर बैठा लालू बंदर ठठाकर हंस पड़ा, " तुम सबके सब डरपोक हो। ये जो लगातार 'फट फट-फट फट' करती हुई चलती है न, इसीलिए ऐसा लगता है। अरे फटफटिया भी डरने की कोई चीज है।" आज फिर उसे शेखी बघारने का मौका मिल गया था।

अब तो चिंटू गोरिल्ले ने लालू की ही चुटकी ले डाली, "हां भाई, इसे देखो, यह इसी पेड़ की इकलौती डाल पर चुपचाप चिपककर बैठा रह जाता है। मजाल है कि फटफटिया गुजरते समय यह दूसरे पेड़ की डाल पर भागने की हिम्मत जुटा सके।"

"अरे नहीं, यह तो बड़ा हिम्मत वाला है। आखिर सर्कस से भागकर जो आया है।" अब तो हाथी दादा भी चुटकी लिए बिना न रह सके।

'हा-हा, हा-हा।' सर्कस से भागकर आने की बात पर एक जोरदार ठहाका छूटा।

बंदर लालू खिसियानी सी हंसी हंसकर बोला, "ऐसी बात नहीं है। मुझे तो सर्कस में फटफटिया ही चलाना सिखाया जा रहा था। वहां इसको मोटर साइकिल कहते हैं। असल में वहां यह बिना साइलेंसर वाली होती थी, जिसके और भयानक शोर से मेरा दिमाग फटने लगता था। इसलिए मुझे वहां से भागना पड़ा , वरना...।"

चिंटू गुरिल्ले को भी लालू बंदर को चिढ़ाने में मजा आया, "हां भाई, इससे होने वाला पर्यावरण प्रदूषण भी तो इससे बर्दाश्त नहीं हुआ होगा।"

लोमड़ी आंखे नचाते हुए बोली, "सच कहा भाई, इस फटफटिया को

चित्र : जय खोहवाल

तो देखने से ही मुझ बूढ़ी की आंखे लगातार खराब होती जा रही हैं। लगता है अब बहरी भी हो जाऊंगी।"

इन सबकी छींटाकशी से लालू के सब्र का बांध टूट गया, "चुप करो सब, बात को जलेबी की तरह किसी दूसरी तरफ घुमाते जा रहे हो। बात फटफटिया से डरने की थी। मैं फिर कहता हूं कि मुझे इससे बिल्कुल भी डर नही लगता।"

"हां भई हां। कहो तो लालू इसे चलकर भी दिखा सकता है। ये कब का डरने वाला है।" चिंटू गोरिल्ले ने बाईं आंख दबाते हुए शरारत से कहा।

अब तो लालू बंदर पूरे ताव में आकर बोला,"हां, दिखा सकता हूं, चलाकर। देखना है, तो लाकर दो फटफटिया। तुम सब खुद डरपोक हो, समझे।"

लालू की ललकार से दो मिनट के लिए वहां सन्नाटा छा गया। फिर सब आपस में खुसर-फुसर करने लगे। लालू ने अपना सिक्का जमते देखा, तो और उत्साहित होकर बोला "क्यों क्या हुआ? सबकी बोलती बंद हो गई?"

चिंटू गोरिल्ले ने अपनी हंसी दबाते हुए फिर कमान संभाली, "नहीं ऐसी बात नहीं है। हम सोच रहे हैं कि तुम फटफटिया चलाकर दिखा ही दो। इससे सारे जंगलवासियों का डर हमेशा के लिए दूर हो जाएगा और तुम जंगल के हीरो भी बन जाओगे।"

" हां। ठीक ही रहेगा। आओ, फटफटिया का इंतजाम मैं कर देता हूं।" मौज में आए हाथी दादा ने झट पेड़ से एक बड़ी डाल तोड़ी और सड़क पर बीचोबीच डालकर बोले, "जैसे ही रास्ता बंद देखकर कोई फटफटिया सवार यहां रुके, सभी जानवर अचानक शोर मचाकर उसको डरा देना। वह पैदल ही घंटों के लिए भाग खड़ा होगा। फिर जब तक वह लौटेगा, लालू उसे चलाकर दिखा देगा। बस हो गया।"

शेखी बघारने में बुरा फंसा बेचारा लालू। लेकिन अब कदम पीछे लौटाने मे भी बेइज्जती ही थी, सो डर को मन मे दबाकर बोला, "हां-हां, चलाकर दिखा दूंगा।"

सभी जानवर थोड़ी ही दूर पर सड़क के दोनों तरफ छिप गए। उम्मीद के अनुसार कुछ ही देर में एक फटफटिया वाला उधर से

गुजरा। सड़क पर पड़ी हुई डाल देखकर वह जैसे ही रुका, सभी जानवरों ने भयानक आवाज निकालते हुए उसकी ओर बढ़े।

फटफटिया सवार बुरी तरह डर गया और फटफटिया छोड़कर गिरते-पड़ते भाग निकला। सब कुछ योजनानुसार हो गया, तो हाथी दादा बोले, "अब यह घंटों नहीं लौटेगा।"

चिंटू गोरिल्ला लालू बंदर को ताव दिलाते हुए चहककर बोला, "चल बेटा लालू, चढ़ जा फटफटिया पर। दिखा दे अपना सर्कस वाला दम। ये जंगली भी क्या सोचेंगे कि किससे पाला पड़ा है?"

सभी जानवर 'लालू...,लालू...' करके उसका जोश बढ़ाते हुए, उसे धकेलते हुए उसके पीछे पड़ गए।

बेचारा लालू मरता, क्या न करता, इतनी बड़ी शेखी जो बघार दी थी।

किसी तरह डर को दबाते हुए लालू फटफटिया तक पहुंचा। गुरिल्ले ने उसकी बांह खींचते हुए फटफटिया की सीट पर चढ़ने का इशारा किया। नजदीक से फटफटिया देखकर लालू के होश उड़ने लगे। हकबकाते हुए बोला, "लेकिन यह तो काफी बड़ी और वजनी लगती है। सर्कस मे तो मुझे काफी हलकी और छोटी फटफटिया मिली थी।"

"अब हलकी और भारी क्या?" हाथी दादा ने उसका उत्साह बढ़ाया, "जब तू मेरे ऊपर सवारी कर सकता है, तो क्या यह फटफटिया मुझसे भी भारी है?"

बेचारा लालू, अपनी शेखी बघारने वाली आदत को मन ही मन कोसते हुए मजबूरन सीट पर चढ़ गया। किंतु हाथों को हैंडल पर रखकर नीचे देखते ही सहम गया, "हाथी दादा! यह तो मेरे कद से कुछ ज्यादा ही ऊंची है। मेरे तो पांव ही जमीन पर नहीं टिक रहे।"

अपने लेखक को जानिए

अरविंद कुमार 'साहू' : 16 पुस्तकें व 500 से अधिक रचनाएं प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। अपूर्व उड़ान, मधुर सरस एवं जागरण जंक्शन समेत कई पत्र-पत्रिकाओं के संपादक रहे।

"ऐसे ही अवसर पर तो जांबाजों के साहस की पहचान होती है लालू मियां। अब इसे चलाकर दिखाओ और बन जाओ जंगल के हीरो।"

चिंटू गुरिल्ले ने फटफटिया को टटोल-टटोलकर देखते हुए अनजाने में ही उसे स्टार्ट करने वाला बटन दबा दिया। फटफटिया अचानक ही घूं... घूं... करके स्टार्ट हुई, तो लालू डर के मारे उछल पड़ा। नतीजे में झटके से फटफटिया का गियर भी दब गया। 'कड़-कड़' की आवाज हुई, तो लालू की घिग्घी बंध गई। वह सहमकर फटफटिया की टंकी से पेट के बल जोरों से चिपक गया। सहारे के लिए उसने हड़बड़ाहट में हैंडल को जोर से दबोचा, तो फटफटिया का पूरा एक्सिलेटर घूम गया।

अब तो स्टैंड पर खड़ी फटफटिया "भांय... भांय...." करती हुई एक झटके में उछली और सीधी सड़क पर भाग निकली। उसकी आवाज से घबराए, बिदककर दूर भागे जंगलवासी जब तक कुछ समझे, फटफटिया सामने के तेज मोड़ से ओझल हो गई। फिर एक जोर का धमाका हुआ, जैसे कोई भारी चीज कहीं जोर से टकराई हो। साथ में एक जोर की चीख भी गूंजी। सभी जानवर किसी अनहोनी की आशंका से वापस आवाज की दिशा मे दौड़ पड़े।

सबने देखा कि सामने सड़क के तेज मोड़ पर फटफटिया पेड़ से टकराकर पलट गई है। घनी झड़ियों मे अटककर वह नीचे खाई में जाने से बच गई थी। किंतु लालू? लालू आखिर कहां है? सभी दुखी होकर अधीरता से उसे पुकारने लगे। सभी को उसकी कुशलता की फिक्र हो रही थी। कहीं लालू को कुछ हो तो नहीं गया? सभी जंगलवासी दुखी हो उठे।

तभी लालू एक पेड़ की डाल से हाथी दादा की पीठ पर धीरे से कूद पड़ा। खिसियानी हंसी के साथ दांत दिखाते हुए बोला "देखा दादा! मैं बिल्कुल भी नहीं डरा। दुर्घटना होने पर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी। जैसे ही सामने पेड़ दिखा, मैं फटफटिया छोड़कर उछला और उसकी डाल पकड़कर लटक गया, वरना...।"

"अरे, वाह रे मेरे शेर! चल कोई बात नहीं। आखिर तूने फटफटिया चलाकर दिखा ही दिया।" चिंटू गोरिल्ला जोर से बोला, तो सभी 'लालू जिंदाबाद' के नारे लगाने लगे।

हाथी दादा ने सूंड़ ऊपर उठाकर चिंघाड़ लगाई, जैसे कुछ कहना चाह रहे हों। थोड़ी शांति होते ही वे कहने लगे, " लालू ने फटफटिया चलाकर न डरने की बात तो मनवा ली, किंतु सच यह है कि बिना पूर्ण प्रशिक्षण के किसी को ऐसा कार्य अथवा दावा नहीं करना चाहिए अन्यथा परिणाम बहुत घातक हो सकता है।"

"जी दादा।" सभी ने इस बात पर हामी भर ली।

तभी दूर से फटफटिया का असली सवार कई लोगों के साथ आता दिखाई दिया। सभी जानवर चुपचाप जंगल के भीतर खिसक लिए।

फूल खिलाऊं

अपने लेखक को जानिए

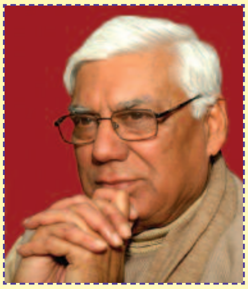

दिविक रमेश : दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और प्रिंसिपल रहे। हिंदी के सुप्रतिष्ठित कवि, बाल-साहित्यकार, अनुवादक और चिंतक। विविध विधाओं में लगभग 80 पुस्तकें प्रकाशित।

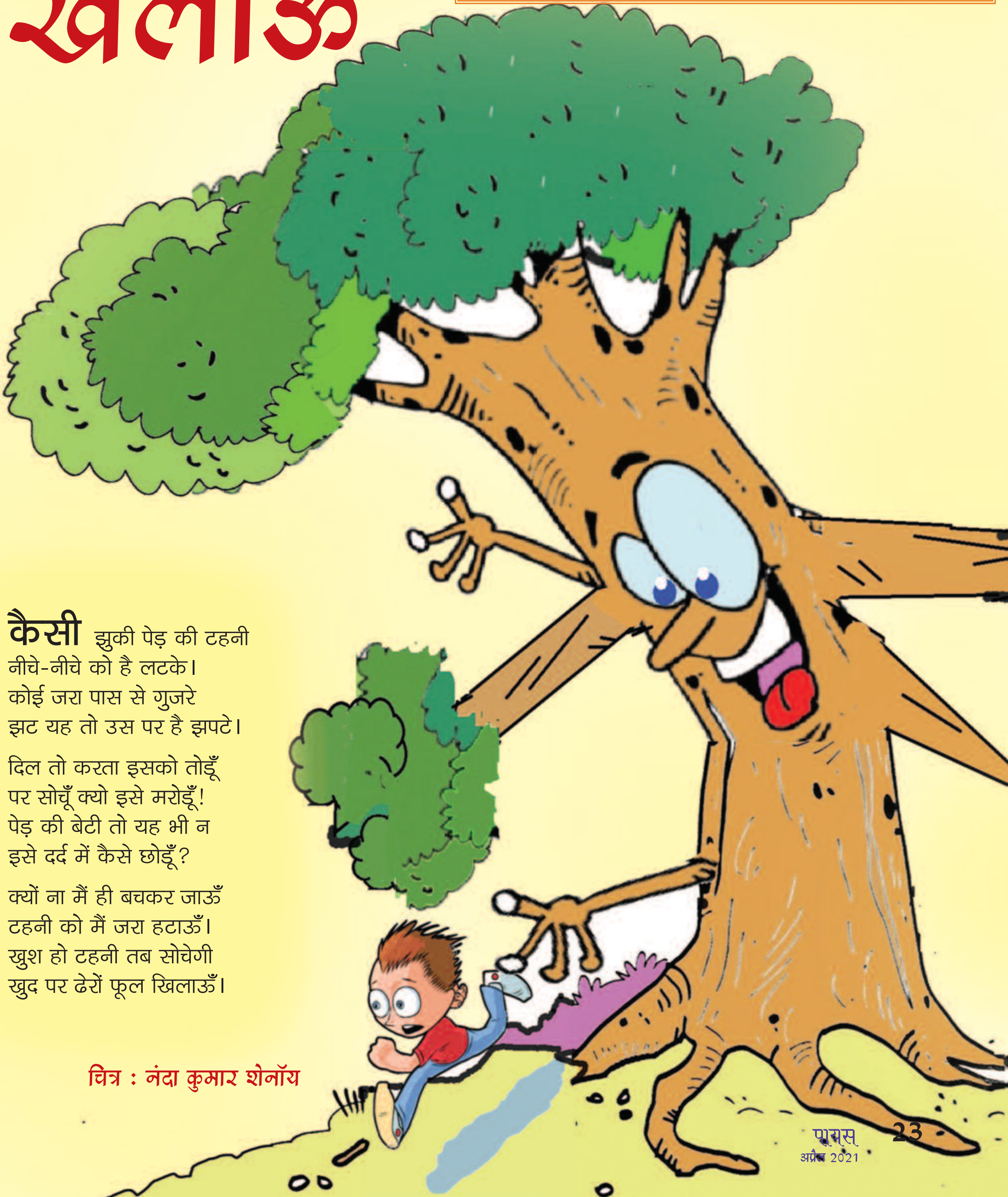

कैसी झुकी पेड़ की टहनी
नीचे-नीचे को है लटके।
कोई जरा पास से गुजरे
झट यह तो उस पर है झपटे।

दिल तो करता इसको तोड़ूँ
पर सोचूँ क्यो इसे मरोड़ूँ!
पेड़ की बेटी तो यह भी न
इसे दर्द में कैसे छोड़ूँ?

क्यों ना मैं ही बचकर जाऊँ
टहनी को मैं जरा हटाऊँ।
खुश हो टहनी तब सोचेगी
खुद पर ढेरों फूल खिलाऊँ।

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

कहानी

अप्रैल फूल

मार्च महीने का अंत निकट ही था। पहली अप्रैल वाले दिन ललित, मोहित और बंटी हर वर्ष की तरह एक बार फिर अप्रैल फूल बना दिए जाएंगे, जो वे बनना नहीं चाहते थे। पर करें तो क्या करें? उनकी बड़ी बहन चारु बड़ी चालाकी से उन्हें हर बार मूर्ख बना देती और बहन को अप्रैल फूल बनाने की उनकी सारी योजनाएं धरी की धरी रह जातीं।

"आइडिया।" नन्हे बंटी ने लगभग चीखते हुए कहा।

"अरे, धीरे। उस जासूस बहन को जरा भी भनक लग गई, तो सारा गुड़ गोबर हो जाएगा।" मोहित ने फुसफुसाते हुए कहा।

"भैया, मैं दीदी को उपहार देने की बात कर रहा था, क्योंकि पहली अप्रैल को ही उनका जन्मदिन भी है। पर एक बात समझ में नहीं आती कि ऐसे दिन पैदा होकर भी दीदी इतनी होशियार कैसे हैं?"

"वह इसलिए मेरे भाई, कि तुम जैसी मोटी अकल वालों की भी इस दुनिया में कमी नहीं। कहां तो हम उन्हें फूल बनाने की बात कर रहे हैं और तू उपहार देने की।" ललित बोला।

"पर भैया बंटी की बात में दम है। हम उनके जन्मदिन पर उन्हें कुछ ऐसा दें, जो असली न होकर नकली हो और वह उसे असली समझकर रख लें, तो समझो, बात बन गई।" मोहित ने कहा।

"हां भैया, याद आया, अभी कुछ दिन पहले ही दीदी मम्मी से सोने की चेन लेने की बात कर रही थी। तो क्यों न हम उन्हें सोने की पॉलिश की हुई नकली चेन उपहार स्वरूप दे दें? उसे वह असली समझकर पहन लेंगी और फूल बन जाएंगी।" बंटी खुश होते हुए बोला।

"हां, यह विचार मुझे पसंद आया। मेरे मित्र पंकज के पिताजी आभूषण-विक्रेता हैं। असली गहनों के साथ-साथ उनकी दुकान में नकली आभूषण भी होते हैं। यदि पंकज हमें एक नकली चेन लाकर दे दे, तो बात बन सकती है। दीदी को नकली जेवर बिल्कुल पसंद नहीं, जब तक उन्हें इस बात का पता

चित्र : सुशील दोषी

चलेगा कि उपहार नकली है, तब तक तो वह फूल बन चुकी होंगी।" ललित ने सुझाया।

इस योजना के बनने पर सब भाई बहुत प्रसन्न थे। जब ललित ने पंकज से इस विषय में बात की, तो वह झट से मान गया और अवसर देखकर, एक सुंदर सी नकली चेन उसे लाकर दे दी।

पहली अप्रैल वाले दिन तीनों भाई मुसकराते हुए चारु से बोले "जन्मदिन मुबारक हो दीदी।" कहकर उन्होंने एक मखमली डिब्बी खोलकर सामने रख दी।

"अरे वाह, इतनी सुंदर चेन।" दीदी खुश होकर बोली।

"दीदी, असली सोने की है, जिसे हम तीनों ने अपने जेब खर्च में मिले रुपयों को जोड़-जोड़कर खरीदा है।" मोहित ने कहा, तो दीदी ने प्यार से उसके गाल थपथपाए और 'सो स्वीट ऑफ यू' कहते हुए उस का मुख चूम लिया।

शाम को तीनों भाइयों ने देखा कि उनकी दीदी नया सिल्क का सूट पहने जन्मदिन मनाने की तैयारी में हैं। उन्होंने उनकी दी हुई चेन भी गले में डाल रखी थी।

"बात बन गई।" एक-दूसरे के कान में फुसफुसाते हुए, तीनों खुशी से झूम उठे और चारु के इर्द-गिर्द नाचते हुए गाने लगे, 'अप्रैल फूल बनाया, तो उनको गुस्सा आया।'

"गुस्सा नहीं, मुझे तो हंसी आ रही है तुम लोगों पर, क्योंकि जिस चेन को लेकर तुम लोग मुझे फूल बनाना चाहते थे, वह तो असली है।"

"पर ऐसा कैसे हो सकता है?" तीनों एक साथ बोले।

"पर हुआ तो कुछ ऐसा ही है। आज सुबह तुम लोगों के स्कूल जाते ही पंकज घर आया था। वह बहुत घबराया हुआ था। उसने बताया कि गलती से वह नकली की जगह असली सोने की चेन ललित को दे गया था और अब यदि उसके पिताजी को यह बात पता चल गई, तो उसकी बहुत पिटाई होगी।

पहले तो मुझे और मां को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ, पर जब यह चेन दूसरे सुनार की दुकान पर दिखाई, तो पंकज की बात सही निकली। तब मैंने वह चेन पंकज को लौटा दी और उसे कहा कि वह उसे यथास्थान रख दे। इसके बाद मां ने वही असली चेन मेरे लिए खरीद ली, क्योंकि वह मुझे बहुत पसंद आई थी। अब बताओ, फूल कौन बना, मैं या तुम लोग।"

तीनों भाइयों की बोलती तो पहले ही बंद हो गई थी, उस पर एक-एक रसगुल्ला उनके मुंह में ठूंसकर दीदी ने रही- सही कसर भी पूरी कर दी।

अपने लेखक को जानिए

सुकीर्ति भटनगर : बाल साहित्य की 33 एवं प्रौढ़ साहित्य की 8 पुस्तकें प्रकाशित। कुछ रचनाएं मराठी एवं कन्नड़ भाषा में अनुदित। उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा बाल साहित्य भारती पुरस्कार सहित लगभग 70 अन्य राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

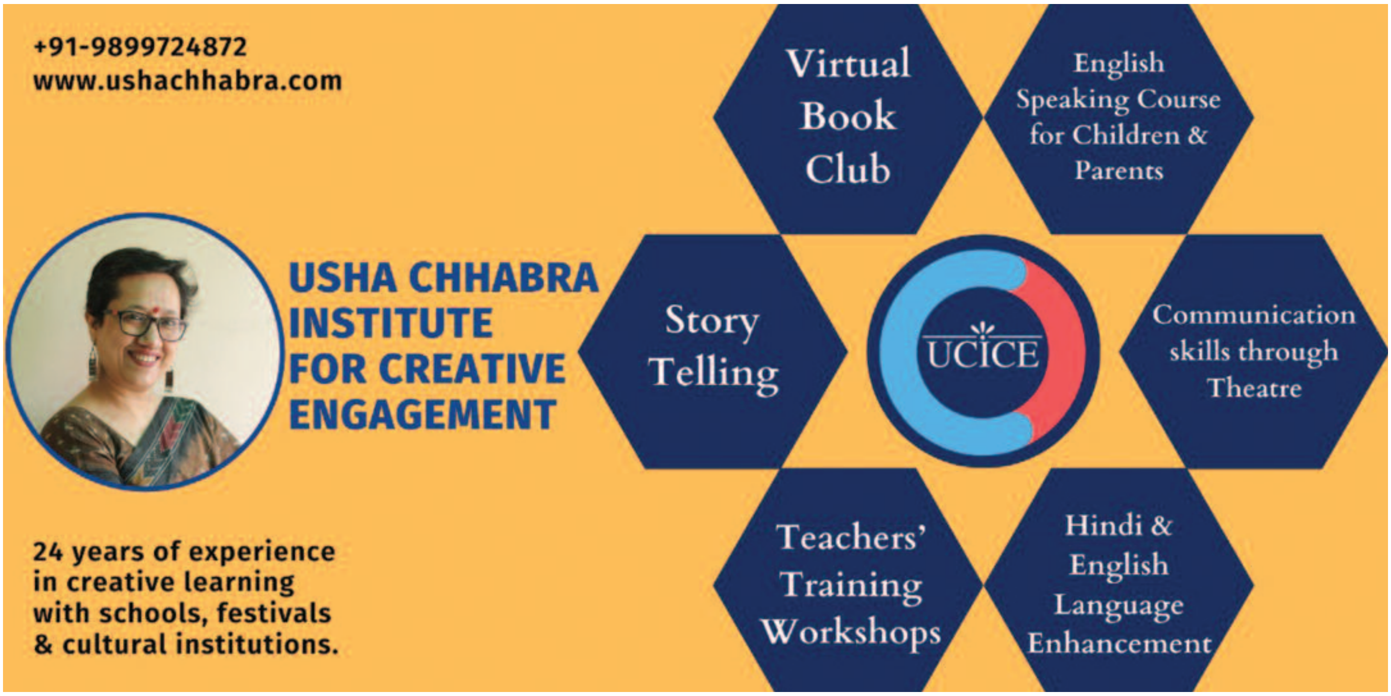

कविता

पृथ्वी कितनी प्यारी है

अपने लेखक को जानिए

राजेन्द्र श्रीवास्तव : सेवानिवृत्त प्राचार्य (हाई स्कूल), पत्र पत्रिकाओं में बाल साहित्य का प्रकाशन। आकाशवाणी से भी यदा-कदा बाल कविता, कहानी का प्रसारण। बाल विधा की तीन पुस्तकें प्रकाशित।

पृथ्वी कितनी प्यारी है
सभी ग्रहों से न्यारी है,
हम सबकी जीवनदायी
कितनी परोपकारी है।

खेत और खलिहान यहाँ
वन-उपवन मैदान यहाँ,
नदियाँ ताल समन्दर हैं
खनिजों की हैं खान यहाँ।

पंछी प्राणी पवन यहाँ
तितली भौंरे सुमन यहाँ,
जल थल नभ में करते हैं
प्राणी आवागमन यहाँ।

लेकिन वन कटते जाते
नए शहर बसते जाते,
मिट्टी रेत खनिज पानी
दिन-प्रतिदिन घटते जाते।

अब हम लें जिम्मेदारी
और न दोहन हो भारी,
जीवन है तब तक अपना
जब तक है पृथ्वी प्यारी।

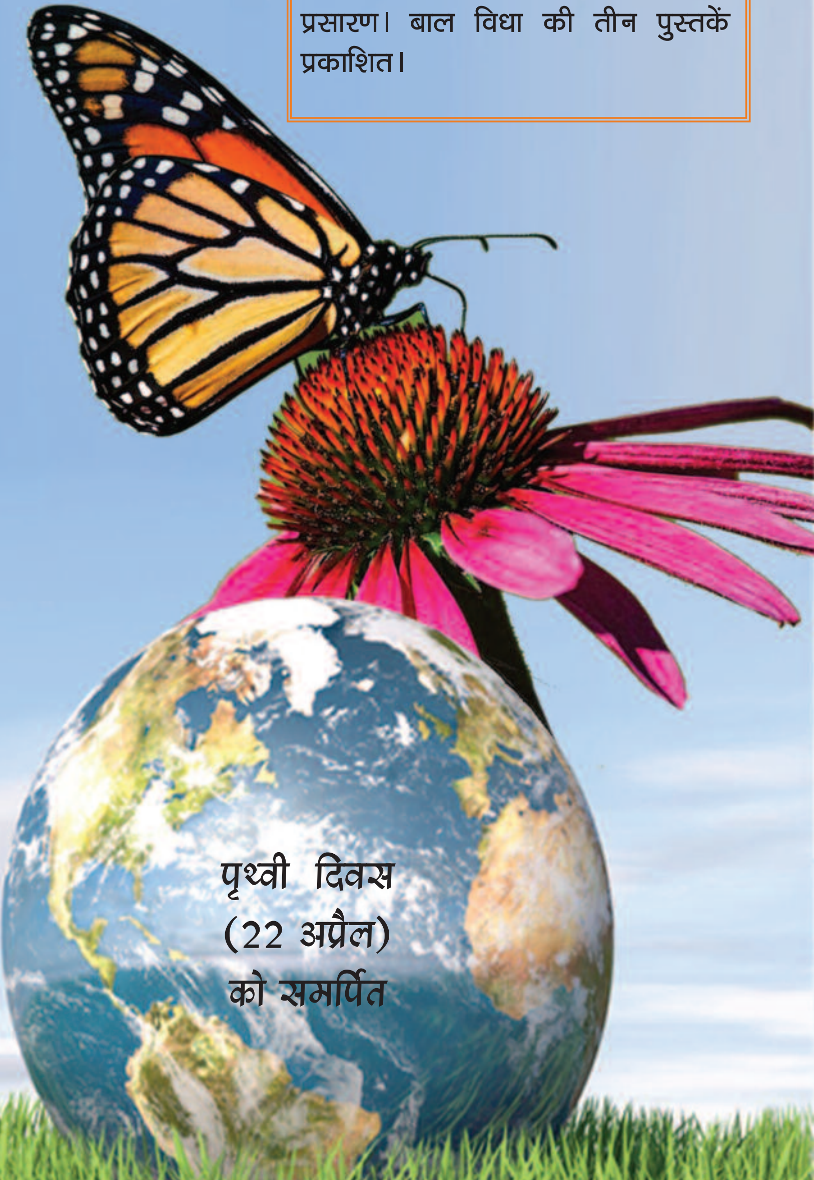

मूल्यवान है जल

नही खोल कर छोड़ो नल।
मूल्यवान है सचमुच जल।।

भू जल नीचे गिरे नित्य ही,
पानी मिले न शायद कल।

जल का दोहन करें अधिक,
इसका पाएँ सब दुष्फल।

पानी बिना न हो पाए,
खेतों में भी कोई फसल।

धीरे-धीरे मिट जाएगी,
जीवों की हर एक नसल।

आज जहाँ पर हरियाली,
बने वहाँ पर भी मरुथल।

बूँद-बूँद की बचत करो,
खोजो नये और भी हल।

अपने लेखक को जानिए

सन्तोष कुमार सिंह : सेवानिवृत्त इंजीनियर। अब स्वतंत्र लेखन। बाल कविताएं, बाल गीत, बाल कहानियां और बाल पहेलियां लेखन। बाल साहित्य की 29 पुस्तकें प्रकाशित।

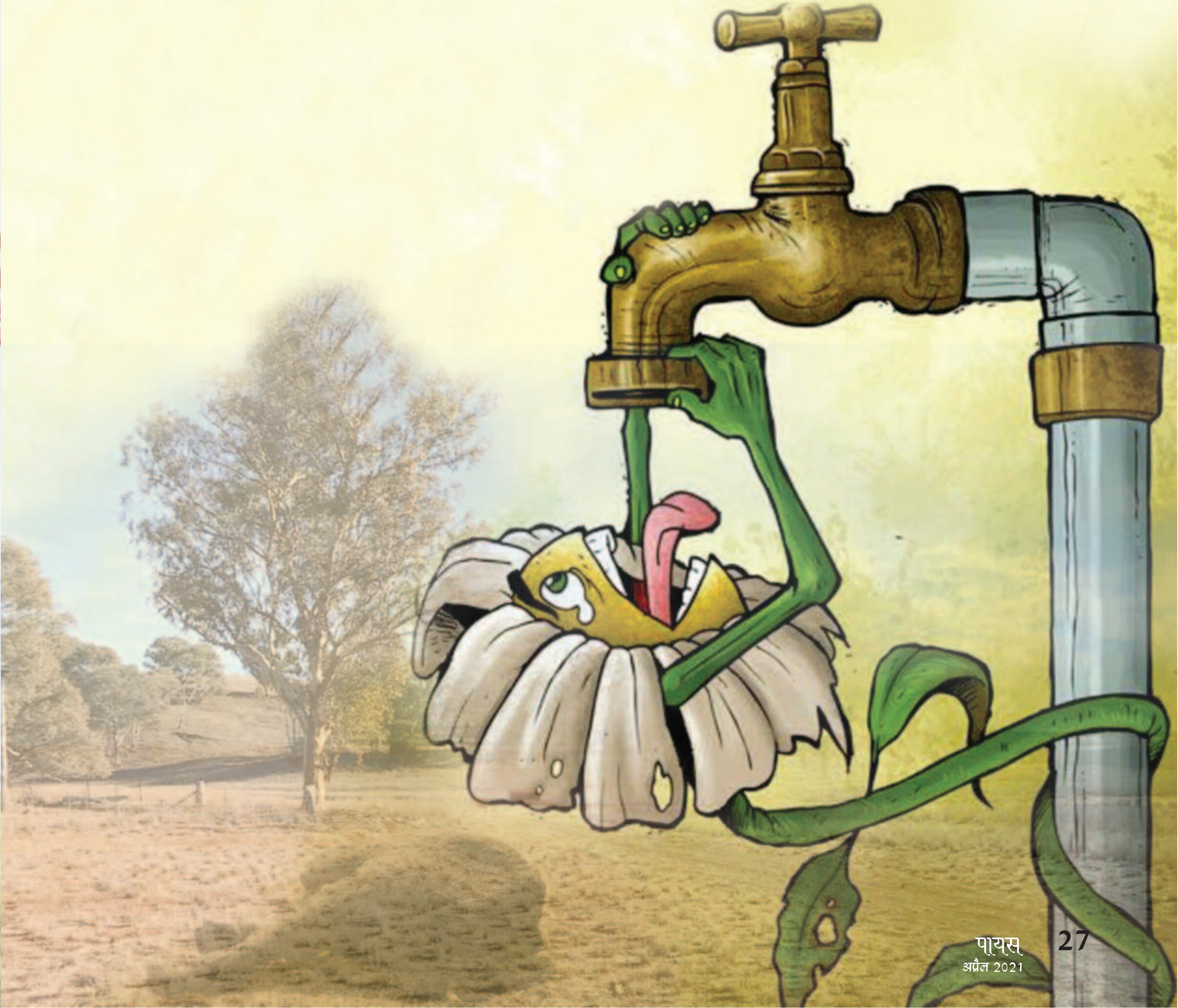

चूहेमल चले बरात

आज जंगल के राजा की शादी थी। बरात में साथ जाने के लिए शेर ने सभी मेहमानों का अपनी ओर से एक अच्छा खासा इंतजाम किया था। सबने अच्छे-अच्छे कपड़े तैयार करवाए थे। हाथी ने एक कपड़े की दुकान पर हाथगाड़ी खींचकर मजदूरी की। उसी से अपने कुर्ते-पाजामे के लिए कपड़े के दो थान कमा लिए थे। बारहसिंगा, हिरन, सियार सबके लिए जंगली पेड़ों के फूल-पत्तों से सुंदर अंगरखे बनवाए गए। लंगूर, बंदर, हिरन, बिल्ली, खरगोश के लिए जैकेट और टोपी बनवाई थी। पक्षियों के पास अपने अनोखे पंख थे ही। सब अपने-अपने लिबासों में सज गए। रह गए चूहेमल।

चूहे जैसे नन्हे मुन्ने प्राणी के शरीर पर कपड़ा ही कितना लगता है! वह किसी दूल्हे राजा के बक्से में घुस गए और अपने लायक कुर्ती, एक कोटी और पजामी का कपड़ा कुतर लाए। यही नहीं अपने कमरे की खिड़की पर बैठी एक लड़की के गले से चमकती सोने की चेन खींच ली। लड़की ने चेन पकड़ ली। उसका एक टुकड़ा ही उनके हाथ लग पाया। जेवर के रूप में उनके गले का हार तो तैयार हो ही गया।

चूहे की होशियारी बड़ा रंग लाई। उनकी तो शान ही अलग थी। सारे मित्र अपने राजा की बरात में जाने को बेहद उत्सुक थे। इंतजार कर रहे थे कि कब बरात चले और कब वे सब जश्न मनाते, झूमते-गाते शेरनी के दरवाजे पर पहुंचे और बढ़िया-बढ़िया चीजें खाएं। आज सबने सोच लिया था कि रास्ते में वे सब एक कतार में चलेंगे। सब पूरे मूड में थे। विवाह का आनंद लेने के लिए बेताब!

बारी-बारी से सबने शेर का टीका किया। लोमड़ी ने बहन का फर्ज निभाया। भाई शेर ने भी भेंट में उसे जोड़ा दिया। लोमड़ी की खुशी का ठिकाना न था।

आखिर बरात चलने का मुहूर्त भी निकल ही गया। जंगल के राजा के महल से बरात चल पड़ी। तय हुआ कि सभी मित्र अपनी लंबाई-चौड़ाई के अनुसार आगे-पीछे चलेंगे। सबसे छोटा सबसे आगे होगा।

हुआ भी ऐसा ही। सबकी अपनी चाल थी। कोई झूम के चल रहा था, कोई मद्धम, तो कोई मंद गति से। वे

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

सब एक-दूसरे से बातें करते, अपनी-अपनी खुशी का इजहार करते चले जा रहे थे।

थोड़ी दूर चलने के बाद अब कोयल ने मीठे स्वर में गाना शुरू कर दिया था। चूहा अपनी छोटी-सी अचकन और टोपी में अलग ही फब रहा था। शायद उसे इस बात का अहसास भी था। कोयल ने गाना क्या शुरू किया, वह तो झूमने ही लगा। कूद-कूदकर नाचने में मशगूल हो गया। डांस करते-करते वह थक ही नहीं रहा था। उसे देखकर बाकी जानवर हीन भावना से ग्रस्त होने लगे। चूहे की इतनी उछल-कूद उनके बर्दाश्त से बाहर हो रही थी। हाथी उसे चेतावनी देते हुए बोला, “क्यों रे, इतना क्यों उछल रहा है?”

“क्यों न नाचूं? आज तो खुशी का दिन है। यही तो मौका होता है, जब मैं अपनी कला दिखा सकता हूं। मुझे बहुत खुशी हो रही है।” चूहे ने अपनी टोपी टेढ़ी करते हुए कहा।

बिल्ली बोली, “अच्छा, तो हमें खुशी नहीं हो रही क्या? मैं शेर की मौसी हूं। तब भी अपनी सीमा में चल रही हूं। फिर तुझमें क्या लाल जड़े हैं, जो तू ऐसे मटक रहा है?”

“अरे, बब्बर शेर की मौसी, तुम तो हो गई बूढ़ी! तुम्हें ऐसे नाचना क्या शोभा देगा?” चूहे ने तपाक से उत्तर दिया और फिर नाचने लगा।

बिल्ली यह सुनकर तिलमिला उठी, “रहने दे, तेरी कद-काठी तो हमेशा छोटी ही रहेगी। तो क्या बालक ही बना रहेगा जीवनभर?”

“मौसी, बच्चे से तो मत जलो। खुशी का मौका है, चलो तुम भी गोल-गोल घुमइयां ले लो।” कहते हुए वह उसके पंजे के पास आ गया।

“मरना है क्या तुझे? कहीं तेरी शामत ना आ जाए?” बिल्ली गुर्राई।

बरात में चल रहे सारे जानवरों ने उसे डराने की बड़ी कोशिश की। हाथी सबसे ज्यादा गुस्से में था। उसका भारी शरीर उसे ऐसा डांस करने में बाधा डाल रहा था। वह कुंठित होकर सियार, लोमड़ी, हिरन सबसे कह रहा था, “इसका दिखावा अब हजम नहीं हो रहा है। इससे कह दो, यह रुक जाए और हमें भी मौका दे।”

लेकिन चूहा अपनी रंगत में था। अब तो वह हिल-हिलकर ब्रेक डांस करते हुए मजाक में बोला, “मैं शेरू का बड़ा भाई हूं।”

अब सबके हंसने की बारी थी। चूहेमल की बात का मजाक बन गया। सब ठठाकर हंसने लगे। अब लग रहा था कि बरात में जैसे जश्न

का माहौल लौट आया हो।

चूहा रुक गया, “हां, बड़ा भाई! इसमें हंसने की क्या बात है?”

“तुम भाई-भाई कैसे हुए? कहां शेर और कहां तुम? वह दनदनाता शेर बब्बर और तुम डरपोक से चूहे? तुम्हारा-उसका क्या क्या मेल?” हाथी गुस्से में था।

चूहे ने जवाब के लिए मुंह खोला भी नहीं था कि साथ चलती हथिनी ने हाथी को डांट लगा दी, “बच्चे से उलझते हो, शर्म करो कुछ!”

हाथी चुप हो गया।

“असल में हाथी भाई, आपको भी पता नहीं, मैं तो आपका भी भाई हूं।” चूहा हंसकर बोला।

दूसरे सब यह सुनकर चौक पड़े, “यह क्या कह रहे हो, चूहेमल? डर नहीं लगता जरा भी?”

चूहा मस्ती में बोला, “देखा नहीं, हथिनी भाभी ने कैसी डांट पिलाई। हाथी भाई तो एकदम चूहा बन गए।”

कहकर वह खूब तेजी से ठुमके लगाने लगा। उसके साथ उसके सभी संगी-साथी भी मस्त हो गए।

बरात शेरनी के द्वार पर पहुंची, दुलहन शेरनी माला लेकर आगे बढ़ी तो शेर ने अपना सिर झुका दिया। सारे दोस्त अपनी-अपनी आवाज में ‘हो-हो-हो’ करके अपनी खुशी जाहिर करने लगे। चूहा इस सारी फिक्र से अलग मटकता-झटकता, उछल-कूद करता रहा। बड़ी आत्मीयता से वह शेर भाई और शेरनी भाभी के आगे-पीछे चक्कर काट रहा था। सब अपने-अपने रंग में रंगे थे। इधर शेर की ससुराल वाले इस छोटे से सुंदर बराती को ठुमकता देख उसकी बल्लैयां ले रहे थे। ✪

अपने लेखक को जानिए

मंजुरानी जैन : साहित्यकार पिता की छत्रछाया में बचपन से ही पढ़ने-लिखने में विशेष रुचि रही। मुंबई के आचार्य मराठे कॉलेज ऑफ आर्ट्स, कॉमर्स और साइंस में पुस्तकालयाध्यक्ष रहीं। अब लेखन में व्यस्त। ‘पराग’, ‘धर्मयुग’ आदि में कहानियां, संस्मरण, लेख प्रकाशित। ‘मेरी प्रतिनिधि बाल-कहानियां’ उनका पहला कहानी-संग्रह है।

अपने लेखक को जानिए

फ़हीम अहमद : रुदौली, फैजाबाद में जन्म। डिग्री कालेज में हिंदी शिक्षक। बाल काव्य में विशेष रुचि। 26 वर्षों से पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन। दो पुस्तकें प्रकाशित। अनेक संस्थाओं से सम्मानित।

मम्मी की मीठी पप्पी

मम्मी की मीठी पप्पी से,
झूम उठे मन छूमछनन।

तितली जब छूती फूलों को,
पाती है प्यारा एहसास।
और ओस की नन्ही बूंदें,
होतीं पुलकित, छूकर घास।

दबे पाँव चुपके से आती
पुरवैया छू लेती मन।

चन्दा की किरणें आंखों को,
शीतलता का दें आभास।
बारिश की बूंदें तन छूकर,
आ जाती हैं मन के पास।

कुहरे का नन्हा टुकड़ा दे
मुखड़े पे भीगी सिहरन।

चील छुए जब बादल को तो,
मन मे उसके बजे सितार।
फड़ -फड़ पंख करे गौरैया,
जब भी उसको छुए फुहार।

बांसों के झुरमुट को छूकर,
गाने लगती गीत पवन।

चित्र : सुशील दोषी

पैपर और व्हिस्की

चित्र : सुशील दोषी

पैपर के आने से पहले व्हिस्की एकदम अकेली थी। उम्र भी ऐसे ही होगी कोई छह-सात महीना। अब छः-सात महीने का बच्चा बहुत बड़ा थोड़े ही होता है। बच्चों की यह उम्र खेलने-खाने की होती है। मम्मी-पापा जानते थे, सो व्हिस्की के खेलने-कूदने के लिए ढेर सारा सामान ले आए थे। लेजर लाइट, छोटी सी एक बॉल और भी न जाने क्या क्या।

मम्मी-पापा के बीच अकेली जान, सो दोनों उसके साथ खूब खेलते। पापा ने बॉल लिया और उछाल दिया `बाल जमीन पर गिरी और गोल-गोल घूमने लगी। व्हिस्की को बाल की ये अदा पसंद आ गई। वह भी उसके साथ खेलने लगी। पहले एक पांव से उसे ठोकर मारती। गेंद लुढ़कती हुई दूर चली जाती, तो दौड़कर उसे पकड़ने की कोशिश करती। कई बार तो वह उस बॉल से इस तरह खेलती, जैसे फुटबाल के खिलाड़ी मैदान में खेलते हैं और पांवों के बीच, आगे पीछे, दाएं-बाएं, तब तक बॉल को घुमाते रहते हैं, जब तक उसका कोई दूसरा बॉल को अपने कब्जे में नहीं ले लेता।

लेजर लाइट की तो दीवानी है व्हिस्की। पापा ने जरा दीवार पर फेंकी नहीं कि उछलकर दीवार पर उसे पकड़ने की कोशिश करती। लाइट कर्टेन पर पड़े तो उछलकर उस पर पकड़ने की कोशिश करती और गिर पड़ती। बॉल और लेजर लाइट के खेल का यह नजारा देखने लायक होता। खेलते-खेलते व्हिस्की थक जाती, तो मम्मी उसे खाना देती, पानी देती। व्हिस्की को जितना खाना होता, खाती और सो जाती।

इस तरह बड़े आराम से उसकी जिंदगी चल रही थी कि एक दिन पैपर घर में आ गया। व्हिस्की को लगा कि यह तो उसके एकछत्र राज्य में बाधा डालेगा। उसके खाने में से खाना खाएगा। ऐसे में वह भूखी रह गई तो ...?

मम्मी तो एक निश्चित समय पर खाना-पानी देती है। अरे, मैं थी, तो आखिर मम्मी-पापा को ऐसी क्या सूझी थी, जो इसे भी ले आए?

व्हिस्की ने तय किया कि मम्मी-पापा के निर्णय का विरोध करेगी। पर कैसे? वे तो इतने बड़े हैं। पर विरोध तो करना है। सो विरोध के लिए वह खाना खाना छोड़ देगी। लेकिन भूख लगेगी, तब कब तक भूखी रहेगी? सारा कुछ सोचकर व्हिस्की ने तय

किया कि ठीक है, वह नए मेहमान की तरफ देखेगी भी नहीं।

तीन-चार दिन तक तो ऐसे ही चला। फिर एक दिन मम्मी-पापा ने देखा कि व्हिस्की और पैपर दोनों एक ही बरतन में खाना खा रहे हैं। इस तरह धीरे-धीरे दोनों में दोस्ती हो गई। बस फिर तो सारे दिन दोनों कभी यहां तो कभी वहां, धमा चौकड़ी मचाते रहते। दोनों जहां रहते, साथ रहते। जहां जाते, साथ जाते, जहां खाते, साथ खाते। मम्मी या पापा कभी आवाज देते, तो भी दोनों साथ-साथ भागकर आते।

इसी तरह सब चलता रहा। एक दिन पता नहीं क्या हुआ, पापा ने आवाज लगाई, "पैपर..., पैपर!"

पैपर ने मानो, सुना ही नहीं। उन्होंने फिर आवाज लगाई, "पैपर ...पैपर!" फिर भी पैपर में कोई हलचल नहीं! पहले तो वह प्यार से उनके हाथ की उंगलियों पर नाचते हुए चाभी के गुच्छे को देखता, तो उनके दाएं-बाएं घूमने लगता। लेकिन आज क्या हुआ? पापा ने आवाज दी और व्हिस्की-पैपर की तरफ से घर में कोई हलचल नहीं दिखी? पापा ने फिर आवाज़ दी, "पैपर..., पैपर...! कम, बेबी कम।"

अरे! अब भी कोई हलचल नहीं? कमाल है, कहीं इधर-उधर तो नहीं चले गए पैपर - व्हिस्की? कभी दरवाजा खुला रह गया हो, और बाहर निकल गए हों दोनों। पर दरवाजा तो बंद है। फिर कहां जाएंगे दोनों?'

इतने में घर के एक कोने में कुछ हलचल सी दिखाई दी। गौर से देखा, तो पैपर अपने दोनों पैर फैलाए बैठा था। उसके चेहरे पर कुछ गुस्सा सा था। गुस्से में उसकी आंखें कुछ और बड़ी दिखने लगतीं थीं।

पापा ने फिर आवाज दी, "पैपर! पैपर!"

पैपर ने अपनी गरदन को टेढ़ी करके झटके से दूसरी तरफ मोड़ लिया। कान भी खड़े कर लिए, मानो कह रहा हो, 'हां, क्या है? जब देखो पैपर-पैपर चिल्लाते रहते हो?'

पापा ने प्यार से उसकी तरफ देखा फिर पूछा, "क्या हुआ भाई? आज इतना गुस्सा क्यों?"

"अब मुझसे क्या पूछते हो? उससे पूछो, जो कभी ठीक से बात नहीं करती। वह तो आज भी नहीं कर रही है।"

पैपर के मन के भाव साफ समझ में आ रहे थे।

पापा ने इधर उधर देखा। कुछ दूरी पर, पलंग के नीचे व्हिस्की बैठी थी।

"अरे तू वहां क्या कर रही है व्हिस्की?" पापा ने आवाज देते हुए पूछा।

व्हिस्की ने पापा की तरफ गौर से देखा, मानो कह रही हो कि, 'इस बवाल से दूर न रहूं, तो क्या करूं?...बहुत परेशान करता है आजकल।" हाव-भाव से लगा, मानो व्हिस्की पैपर की शिकायत कर रही हो।

पापा बोले, "पर तुम दोनों तो बड़े प्यार से रहते हो, फिर आज वैसा क्या हो गया व्हिस्की?"

व्हिस्की ने अपनी गरदन में एक झटका सा दिया, मानो कह रही हो, "उसी से पूछो। मुझ से क्या पूछते हो।" उसका गुस्सा सातवें आसमान पर था।

पापा की आवाज सुनकर पैपर धीरे-धीरे पलंग के नीचे से बाहर आया और दूर बैठ गया। फिर एक नजर व्हिस्की पर डाली। फिर पापा की ओर देखा तो समझ गया, 'आज लगता है, व्हिस्की ने पापा से चुगली की है। पर मैंने तो ऐसा कुछ भी नहीं किया। बहुत बनती है, अपने को। जरा सा प्यार जता दो, तो अपने को हूर की परी समझने लगती है। गंवारिन कहीं की।'

ऐसा सोचते-सोचते पैपर ने एक जम्हाई ली। जीभ से अगले पांव के निचले हिस्से को लार से गीला किया। उसे चेहरे पर घुमाया। फिर गीला किया और फिर चेहरे पर घुमाया। चार-पांच बार ऐसा करके, उसने अपना चेहरा साफ किया और फिर व्हिस्की और पापा की ओर एक नजर डाली। फिर अपनी जगह से उठा और धीरे धीरे आगे बढ़ने लगा। तभी उसने देखा कि मम्मी टूना

का पाउच हाथ में लिए मुसकराते हुए कमरे से बाहर आईं। पैपर ने देखा और तेजी से मम्मी की ओर दौड़ा। उसके दौड़ने के अंदाज पर मम्मी इतनी मोहित हो गईं कि जल्दी से उसे गोद में उठा लिया।

मम्मी की गोद पैपर को सबसे सुरक्षित जगह लगती है। गोद में बैठकर पैपर ने अपनी कोमल सी आवाज में मियाऊं किया, फिर व्हिस्की की तरफ देखा, मानो उसे चिढ़ा रहा हो।

मम्मी ने प्यार करते हुए पूछा, "हां, क्या है, भूख लगी है ?

पैपर ने भी मम्मी के भीतर उमड़ रहे प्यार को समझा। फिर शरीर को ढीला किया और छोड़ दिया। मम्मी के प्यार करने से उसकी आंखें बंद होती जा रही थीं। मम्मी थोड़ी देर तक उसे यूं ही कभी गर्दन और कभी सिर पर प्यार करती रहीं। पेपर भी कराता रहा।

व्हिस्की को भीतर से जलन हो रही थी। मानो कह रही हो, 'कमबख्त शरारत भी करता है, और प्यार भी पाता है। एक मैं हूं, जो हमेशा मात खा जाती हूं। पर, मैंने भी तय कर लिया है कि आज इसे मजा चखाकर ही रहूंगी।'

'मियाऊं-मियाऊं' पैपर ने धीरे से अपनी प्यारी और कोमल सी आवाज निकाली, मानो व्हिस्की से कह रहा हो, "जो करना है, कर लो। मैं भी देखता हूं, क्या कर पाती हो ?"

पैपर के मन में जो हलचल मची थी, उसका शरीर पर असर होना ही था। वह मम्मी की गोद में कसमसाने लगा। मम्मी ने समझा कि वह गोद से उतरना चाहता है, सो उन्होंने भी उसे ऐसे ही ऊपर से छोड़ दिया। पैपर धम से जमीन पर गिरा तो मियाऊं की तेज आवाज उसके मुंह से निकल गई।

व्हिस्की ने पैपर को जमीन पर गिरते देखा और जोर से मियाऊं की, मानो कह रही हो, 'देखा बच्चू, बुरी नीयत का फल भी बुरा होता है।'

एकाध मिनट तो व्हिस्की जमीन पर गिरे पैपर को नजरअंदाज करती रही, फिर उसे निढ़ाल सा पड़ा देख उसके पास पहुंची। एक बार प्यार से पैपर की ओर देखा। फिर उसका माथा चाटने लगी। पैपर भी देख रहा था और सोच रहा था कि व्हिस्की इतना प्यार तो कभी नहीं जताती थी! आज क्या हो गया? कब से कहती जा रही है, कहती जा रही है। लगता है, इसका गुस्सा दूर हो गया है। पैपर ने भी प्यार से अपना एक पंजा व्हिस्की के सिर पर रखकर अपना प्यार जताने में देर नहीं की।

तभी भीतर से टूना का पाउच लिए मम्मी कमरे से बाहर आईं। व्हिस्की-पैपर दोनों की निगाह एक साथ मम्मी के हाथ पर पड़ी। दोनों एक साथ उठे और मम्मी की ओर दौड़ पड़े। मम्मी के दोनों हाथों में टूना का एक ही पाउच लगा था। पहले कभी ऐसा होता था, तो हमेशा पैपर टूना पर झपटने की कोशिश करता था, लेकिन आज मम्मी ने देखा कि पैपर व्हिस्की की ओर देख रहा है, मानो इशारे से कह रहा हो कि, 'आगे बढ़ व्हिस्की, मम्मी टूना लाई है। खा ले।'

पर व्हिस्की गुस्सा भले करती हो लेकिन इतनी स्वार्थी नहीं है कि पैपर जैसे दोस्त को छोड़कर अकेले ही टूना चाट ले।

व्हिस्की ने भी बड़े प्यार से 'मियाऊं की आवाज निकाली, मानो कह रही हो कि, 'चल दोनों साथ खाते हैं।' ✪

अपने लेखक को जानिए

सोमदत्त शर्मा : आकाशवाणी में उपनिदेशक रहे हैं। वरिष्ठ लेखक, कवि, नाटककार। देश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में वैचारिक लेख, कविताएं, दोहे तथा व्यंग्य रचनाएं प्रकाशित।

संप्रति : उपाध्यक्ष भारतीय शिक्षण मंडल, दिल्ली प्रांत और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य हैं ।

100 नम्बर का कमाल

स्कूल की छुट्टी के बाद दोनों दोस्त राजन और रजत अपना-अपना बैग उठाकर रिक्शे पर बैठ गए। रिक्शा चल दिया और दोनों अपनी गप्पों में लग गए। थोड़ी दूर जाने पर जैसे ही रिक्शावाला रिक्शे को पतली सड़क पर मोड़ने लगा, रजत हड़बड़ाकर बोला, "अरे, भइया! इधर क्यों मोड़ रहे हैं? सीधे चलिए न। नाले वाली सूनी सड़क ठीक नहीं है।"

"बेटा, आज थोड़ा जल्दी में हूं। यह रास्ता छोटा है। इसीलिए इधर से ले जा रहा हूं।"

"नहीं-नहीं भइया। मम्मी इस रास्ते से आने के लिये मना करती हैं।" रजत फिर से बोला।

"अरे बेटा, मैं अक्सर इधर से सवारी ले जाता हूं। कोई परेशानी नहीं होगी।" रिक्शेवाला बोला।

"नहीं-नहीं। बहुत सुनसान रास्ता है। आप सीधे रास्ते से ही चलिए न।" रजत ने जोर देकर कहा।

"अरे बेटा, मैं हूं न तुम्हारे साथ। डर क्यों रहे हो? मैं तुम्हें सुरक्षित पहुंचा दूंगा।" रिक्शेवाला तेजी से रिक्शा चलाता हुआ बोला।

राजन की ओर घूमकर रजत बोला, "यार, यह तो सुन ही नही रहा। मम्मी कहती हैं, यह रास्ता ठीक नहीं है। इधर से मत आना।"

मस्तमौला राजन बोला, "क्यों परेशान हो रहे हो दोस्त। दो मिनट का तो रास्ता है। फिर इतना आगे आ भी गए हैं।"

अभी वे बात कर ही रहे थे कि एक कार तेजी से उनके सामने से आई और रिक्शे के बगल से निकल गई। दोनों दोस्त भौचक्के से एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

राजन ने खुद को संभाला और पूछा, "रजत, तुमने भी वही देखा न?"

डरा-सहमा सा रजत बोला, "हां, मैं पहले ही मना कर रहा था।"

राजन जल्दी से अपनी कॉपी निकालकर कुछ लिख रहा था। फिर रिक्शेवाले से बोला, "भइया, अपना

चित्र : इंदिरा

मोबाइल दीजिए, एक बहुत जरूरी फोन करना है।"

मोबाइल पकड़ाता हुआ रिक्शेवाला बोला, "लो बेटा, बात कर लो। बता दो घर में। बहुत डरते हो तुम लोग। इतना डरने से काम नहीं चलता। हिम्मती बनो।"

राजन ने रजत के पीले पड़े चेहरे की ओर देखा और 100 नम्बर पर फोन मिलाने लगा। फोन उठते ही राजन बोला, "हलो सर, मैं राजन बोल रहा हूं। नाले वाली सूनी सड़क से। अभी-अभी एक नीली कार हमारे बगल से गई है मुख्य सड़क की ओर। उसमें एक बच्चा मदद मांग रहा था। उसके मुंह पर टेप लगा हुआ था। जी, मैंने कार का नम्बर लिख लिया है। आप नोट कीजिए।

"जी, मेरा घर पीली टंकी के बगल वाला है। मेरे पापा का नाम मोहित वर्मा है।"

बात करते-करते वे घर पहुंच गए थे। रजत अपना बैग उठाकर तेजी से अपने घर की ओर भागा। राजन अपने घर चला गया।

थोड़ी सी देर में पुलिस की कुछ गाड़ियां आकर खड़ी हो गईं। सब अपने-अपने घर के बाहर आ गए थे। रजत अपनी मम्मी का हाथ पकड़े हुए था।

"राजन कौन है?" इंस्पेक्टर ने पूछा।

"मेरा नाम राजन है।" राजन आगे बढ़कर बोला।

"शाबाश बेटा! आज तुमने अपनी सतर्कता से एक बच्चे का अपहरण होने से बचा लिया। हम तुम्हें बधाई देने आए हैं।" इंस्पेक्टर ने पीठ ठोकी।

"अरे तुमने तो कमाल ही कर दिया। पर तुझे पता कैसे चला।" रजत की मम्मी ने पूछा।

"आंटी, वह बच्चा दोनों हथेली से कार की खिड़की पर मार रहा था और टेप उसके मुंह पर चिपका था। मेरे पापा कहते हैं, कभी भी कुछ गलत दिखे, तो हमें 100 नम्बर पर पुलिस की मदद लेनी चाहिए।"

"शाबाश बेटा! और अपने बेटे को इतना बहादुर बनाने के लिए आपको भी बधाई।" राजन की मम्मी से इंस्पेक्टर बोले और गाड़ी में बैठकर चले गए।

इस घटना ने राजन को सबकी आंख का तारा बना दिया और 100 नम्बर का महत्त्व भी सबको बता दिया था।

अपने लेखक को जानिए

नीलम राकेश : पूरा नाम नीलम राकेश चन्द्रा। बदायूं में जन्म। चर्चित कहानीकार। नाटक, उपन्यास, लघुकथा भी लिखती हैं। अब तक 20 से ज्यादा किताबें प्रकाशित। कई प्रतियोगिताओं में कहानी लेखन में प्रथम पुरस्कार। अनेक पुरस्कार से सम्मानित। आजकल लेखकों से अपने साक्षात्कार के लिए चर्चित

सीपी का जाल

सीना और उसका साथी कबूतर टिंकू पहली बार जोड़ा बनाकर अपने लिए घोंसला बनाने में जुटे हुए थे। गरमी का मौसम था। दोनों ने बहुत मेहनत से सुंदर सा घोंसला तैयार कर लिया।

समय आने पर सीना ने उसमें दो अंडे भी दे दिए। वह दिन भर अंडे सेंकती और टिंकू उड़-उड़कर उसके लिए खाने की व्यवस्था करता।

जल्दी ही अंडों से छोटे-छोटे बच्चे निकल आए। दोनों उन्हें देखकर बहुत खुश थे। अब उन दोनों की जिम्मेदारी बढ़ गई थी। बच्चों की अभी ढंग से आंखें भी नहीं खुली थीं और पर भी नहीं आए थे।

बच्चे घोंसले में हिलत-डुलते रहते। एक दिन घोंसले से सीना का बेटा टीटू अचानक नीचे गिर पड़ा। सीना खाना लेकर घोंसले में लौटी, तो वहां पर केवल चुन्नू को अकेला पाकर घबरा गई। उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई। जैसे ही उसकी नजर नीचे गई, उसे मकड़ी का बड़ा सा जाल दिखाई दिया। टूटू घोंसले से गिरकर मकड़ी के उस जाल में फंस गया था। उसकी वजह से उसे चोट नहीं आई थी, लेकिन उसके वजन के कारण जाल बीच से टूट गया था।

मकड़ी टीटू के पास पहुंची। सीना जोर से चिल्लाई, "टीटू को कुछ मत करना सीपी।"

"यह तो अब मेरा भोजन है।"

"प्लीज, मेरे बेटे को छोड़ दो।"

"आज तुम्हारे बेटे के कारण मेरा इतना बड़ा जाल टूट गया है। इसे बनाने में मेरा कितना समय लगा था। इसी की बदौलत मुझे खाना मिलता था।"

"उसकी चिंता मत करो। तुम्हारे लिए खाने का इंतजाम मैं करूंगी।" सीना विनती करते हुए बोली।

सीपी रुक गई। फिर बोली, "मुझे तब तक खाना चाहिए, जब तक मेरा नया जाल तैयार नहीं हो जाता।"

"तुम जो कहोगी, मैं करने के लिए तैयार हूं, पर इस समय मेरे बेटे

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

की जान बख्श दो।”

“ठीक है।” सीपी बोली। उसने टीटू को छोड़ दिया।

टीटू को सकुशल देख, सीना की जान में जान आई। उसने आसपास देखा। तभी उसे सामने पेड़ पर चंपू बंदर नजर आया। वह बोली, “चंपू भाई, मेरा बेटा घोंसले से नीचे गिर गया है। उसे घोंसले तक पहुंचाने में मेरी मदद कर दो।”

“वह घोंसले से कैसे गिर पड़ा? उसे कहीं चोट तो नहीं आई?”

“वह ठीक है। नीचे सीपी मकड़ी का जाल था। उसकी वजह से उसकी जान बच गई।”

“शुक्र है, वह सही सलामत है।” इतना कहकर चंपू ने टीटू को प्यार से उठाकर घोंसले में रख दिया।

सीना और टिंकू ने राहत की सांस ली। अभी कुछ ही देर हुई थी कि सीपी जोर से बोली, “सीना, मुझे और मेरे बच्चों को बहुत जोर की भूख लगी है। तुमने अभी तक खाने का इंतजाम नहीं किया।”

“सीपी, तुम चिंता मत करो। मैं जा रही हूं।” इतना कहकर सीना भोजन लेने चली गई। कुछ ही देर में उसने कुछ कीड़े लाकर उसे दे दिए। भोजन पाकर सीपी खुश हो गई। उसके लिए आज के खाने का जुगाड़ हो गया था।

दूसरे दिन से टिंकू और सीना बहुत सतर्क हो गए थे। अब वे बारी-बारी से खाना ढूंढ़ने जाते, जिससे उनके बच्चों को फिर कोई नुकसान न हो।

अब उन दोनों के ऊपर पहले से ज्यादा जिम्मेदारी आ गई थी। उन्हें अपने परिवार के अलावा सीपी मकड़ी के भोजन की भी व्यवस्था भी करनी पड़ती थी। वह पहले सीपी के लिए भोजन की व्यवस्था करते, फिर अपने बच्चों को खाना खिलाते और आखिर में अपने लिए भोजन जुटाते। इतनी सारी व्यवस्था में कई बार उन्हें भूखा भी रहना पड़ जाता। पर बच्चों की खातिर वे हर मुसीबत उठाने के लिए तैयार थे ।

सीपी मकड़ी को बैठे-बैठे खाना मिलने लगा था। वह अब दिन भर आराम करती। सीना और टिंकू के लाए हुए खाने से उसका मजे में गुजारा चल रहा था।

दो हफ्ते बीत गए। एक दिन सीना बोली, “सीपी, तुम्हारा नया जाल कब तक बन जाएगा?”

“देख तो रही हो, मैं नया जाल बनाने की कोशिश कर रही हूं। इसे बनाने में बहुत समय लगता है।”

“मुझे पता है। मैं तो तुम्हारी बहुत

आभारी हूं। तुम्हारे जाल के कारण ही मेरे बेटे टीटू की जान बच गई थी।” थोड़ी देर उसके साथ बातें करके सीना फिर खाने की व्यवस्था में जुट गई।

दो महीने बीत गए, पर सीपी का नया जाल अभी तक बनकर तैयार नहीं हुआ था। इतने समय में सीना के बच्चे बड़े होकर उड़ने भी लगे। सीना और टिंकू को समझ नहीं आ रहा था कि सीपी जाल बनाने में इतनी देर क्यों कर रही है? आखिर एक जाल बनाने में मकड़ी को समय ही कितना लगता है?

एक दिन सीना ने फिर कहा, “दो महीने हो गए हैं सीपी। लेकिन तुम्हारा जाल अभी तक बनकर तैयार नहीं हुआ। मैं कब तक तुम्हारे भोजन की व्यवस्था करती रहूंगी?”

“यह तो तुम्हें तब सोचना चाहिए था, जब तुम्हारे बेटे ने मेरा जाल तोड़ दिया था।”

“जाल बनाने के लिए इतना समय बहुत होता है सीपी। मैं और टिंकू तबसे तुम्हारे भोजन की व्यवस्था कर रहे हैं । तुम्हें भी अपने हाथ-पैर तेजी से चलाने चाहिए।”

“मुझे लगता है, तुम अपने वादे से मुकर रही हो। ”

“ऐसी बात नहीं है। मैं कब से देख रही हूं, तुम्हारा जाल बनकर तैयार ही नहीं हो रहा। मैंने तो कहा था, जब तक तुम नया जाल बनाती हो, तब तक मैं तुम्हारे खाने की व्यवस्था कर दूंगी। पर तुम तो जाल बनाना ही नहीं चाहती, तो हम भी क्या करें?”

सीना की बात सुनकर सीपी बोली, “यह तुम ठीक नहीं कर रही हो। मैं नहीं जानती, जब तक मेरा जाल बनकर तैयार नहीं होता, तुम्हें मेरे भोजन की व्यवस्था करनी ही होगी।”

बच्चों को बड़ा करके सीना और टिंकू उनकी चिंता से मुक्त हो गए

अपने लेखक को जानिए

डॉ. के. रानी : **पूरा नाम डॉ. कुसुम रानी नैथानी। प्रधानाचार्या पद से सेवानिवृत्त। तीन दशक से लेखन कार्य में सक्रिय। वर्ष 2016 में ‘राष्ट्रपति पुरस्कार’ से सम्मानित। अब तक अनेक कहानियां सभी प्रतिष्ठित बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित। अब तक चार बाल कहानी संग्रह व एक बाल उपन्यास प्रकाशित।**

थे, पर सीपी के खाने की चिंता उन्हें परेशान किए जा रही थी।

एक दिन सीना घोंसले से कुछ दूर बरगद के पेड़ पर चुपचाप बैठी हुई थी। तभी चिंपू बंदर वहां आया। उसे उदास देखकर चिंपू ने पूछा, "क्या हुआ? ऐसे क्यों बैठी हुई हो? तुम्हारे बच्चे ठीक हैं?"

"मेरे घर पर सब ठीक हैं। तुम्हें याद होगा, एक बार मेरा बेटा टीटू पेड़ से गिर गया था।"

"हां याद है। उस बुरी घड़ी को अब क्यों याद कर रही हो?"

"बात ऐसी है कि..." कहकर उसने सीपी की सारी बात चिंपू को बता दी।

"तुम कहो तो मैं उसे अभी सबक सिखा दूं।"

"नहीं, काम निकल जाने के बाद हमें स्वार्थी नहीं हो जाना चाहिए। मैं तो चाहती हूं, उसे कुछ नुकसान भी न हो और सबक भी मिल जाए।"

"तुम्हीं बताओ मुझे क्या करना होगा?"

"जो भी कर सकते हो, वह तुम ही कर सकते हो।" इतना कहकर सीना ने उसे कुछ समझाया और उड़कर अपने घोंसले में आ गई।

थोड़ी देर में चिंपू नीम के पेड़ के नीचे आकर कुछ ढूंढ़ने लगा। उसे देखकर सीपी ने पूछा, "क्या ढूंढ़ रहे हो चिंपू?"

"यहां पर मेरी कीमती पत्थर गिर गया है। उसे ही ढूंढ़ रहा हूं।" इतना कहकर वह उस झाड़ी को जोर-जोर से हिलाने लगा जिस पर सीपी थी।

"ऐसे मत करो चिंटू भाई। इससे तो मेरा घर उजड़ जाएगा।"

"मुझे तो तुम्हारा घर यहां कहीं दिखाई नहीं दे रहा।"

"मैं यही तो रहती हूं, इस झाड़ी की डाल में।"

"मकड़ी तो जाल बनाकर रहती है। तुमने डाल पर रहना कब से शुरु कर दिया?"

"तुम्हें तो पता ही है, एक दिन सीना...।"

"सीपी, इस बात को तो बहुत दिन हो गए हैं। इतने समय से अभी तक तुम्हारा नया जाल नहीं बन सका।"

"बनाने की कोशिश कर रही हूं, लेकिन अकेले जाल बनाने में बहुत समय लगता है।"

"कोई बात नहीं। अच्छा ही हुआ जो अभी इस झाड़ी पर तुम्हारा जाल नहीं है, वरना मुझे पत्थर ढूंढ़ने में दिक्कत होती।"

इतना कहकर उसने पत्थर ढूंढने के बहाने से उस झाड़ी की सारी छोटी-बड़ी डालों को तोड़ दिया। सीपी चुपचाप यह सब देखती रही और बोली, "तुमने तो मेरे जाल की जगह ही बर्बाद कर दी।"

"तुम्हारा जाल तो यहां दिखाई नहीं दिया। तुम चाहो, तो अब पास ही किसी झाड़ी पर आराम से अपना जाल बना सकती हो।"

"तुम ठीक कह रहे हो यही सही रहेगा।" इतना कहकर सीपी वहां से चुपचाप चली गई। अब वह पछता रही थी कि मुफ्त के खाने के चक्कर में उसने इतने समय तक अपना जाल नहीं बनाया, जिसके कारण आज उसे अपने पुरखों की जगह छोड़कर दूसरी जगह जाना पड़ रहा था। अब क्या हो सकता था?

उसके वहां से जाते ही सीना और टिंकू ने राहत की सांस ली ✪

अच्छे चैनल दिखलाओ

चित्र : सुशील दोषी

चूहे ने दुकान पर जाकर
कहा-सुनो, बिल्ली बी!
बच्चे मेरे बिगड़ रहे हैं
देख-देखकर टीवी।

तुम बुद्धू बक्सा फौरन
अपना वापस मंगवाओ।
रुपए जितने दिए तुम्हें वे
सभी मुझे लौटाओ।

वरना सेट दुकान पर हैं जो
उनसे बदला लूंगा।
ऐसी-तैसी कुतर-कुतरकर
मैं उनकी कर दूंगा।

बिल्ली बोली-चूहे प्यारे
छोड़ो राग पुराना।
ज्ञान-मनोरंजन का अब
टीवी में भरा खजाना।

हाथ रिमोट रखो खुद
बच्चों को संग-साथ बिठाओ।
गंदे चैनल लॉक करो
अच्छे चैनल दिखलाओ।

अपने लेखक को जानिए

सूर्यकुमार पांडेय : : जाने-माने बाल गीतकार और कवि। 55 वर्षों से बच्चों के लिए कविताएं लिख रहे हैं। 25 पुस्तकें प्रकाशित हैं। साहित्य भारती सम्मान, सहित तीन दर्जन से अधिक सम्मान-पुरस्कार मिल चुके हैं।

आलस को दूर भगाना

मोटू मेढक होकर उदास,
आया चूहे डाक्टर के पास।
बोला,"डाक्टर जी दो दवाई,
तोंद मेरी कितनी बढ़ आई।
जरा चलूं, तो सांस फूले,
याद किया मुझे सब भूले।'
चूहा बोला, मोटू राम,
आलस का है यह परिणाम।
दिन भर तुम करो आराम,
दवा न करेगी काम।
मुफ्त में दे रहा हूं नुस्खा,
करना तुम उपयोग उसका।
सैर करना और कम खाना,
आलस को दूर भगाना।

अपने लेखक को जानिए

हरिन्दर सिंह गोगना : पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब) में कार्यरत। सात सौ से अधिक बाल कविताएं, बाल कहानियां, लेख, लघुकथाएं विभिन्न पत्रिकाओं व अखबारों में प्रकाशित। नंदन, चंपक, बालहंस, नन्हे सम्राट, व जनसत्ता, दैनिक भास्कर, अमर उजाला, दैनिक जागरण, पंजबा केसरी, दैनिक ट्रिब्यून आदि प्रतिष्ठित अखबारों में रचनाओं का निरंतर प्रकाशन।

चित्र : सुशील दोषी

अप्रैल फूल बनाया...
चित्र और परिकल्पना : पंकज राय
चिन्टू एक बहुत बुद्धिमान पर भुलक्कड़ चूहा था। एक दिन वह घर में अकेला था।
आज घर में मैं अकेला हूं। क्यों न दोस्तों को बुला लूं, खेलने के लिए?
या अकेले होने का फायदा उठाकर गाने का अभ्यास कर लूं?
अंत में चिन्टू ने घर में अकेले ही रहकर गाने का अभ्यास करने का फैसला किया
ला...ला... डिंग...डोंग.. ला...ला... सिंग...सोंग..
चिन्टू तो भुलक्कड़ था। गाने के जोश में वह दरवाजे को बंद करना भूल गया। उसका गाना सुन सुनहरी नामक बिल्ली चुपके से घर के अंदर आ गई।
वाह, दरवाजा खुला है। आज का दिन मेरे लिए लकी साबित होगा।

चिन्टू को देखकर सुनहरी बड़ी प्रसन्न हुई।
आज इस मोटे चूहे को मेरा ब्रेकफास्ट बनने से कोई नहीं बचा सकता।
सुनहरी को देखकर चिन्टू जहां का तहां खड़ा रह गया।
हे भगवान, यह घर में कैसे घुस आई?
चिन्टू की जान खतरे में थी। जान बचाने को वह विपरीत दिशा में दौड़ चला।
मूर्ख चूहे। कहां बचकर जाएगा? तू मेरे से तेज नहीं भाग सकता।
मुझे इस मोटे राक्षस से बचना होगा।
चिन्टू कूदकर लकड़ी के शेल्फ पर चढ़ गया।
इसके ऊपर पहुंचने पर मैं बच जाऊंगा।
नीचे आओ। ऊपर जाकर बच नहीं पाओगे।
चिन्टू का प्लान काम कर गया। वह अब सेफ था।
धन्यवाद भगवान। जान बच गई मेरी।

पर वह इतना भाग्यशाली भी नहीं था। अचानक उसका पैर फिसला और...
आ, तेरा ही इंतजार है।
आज मेरी मौत निश्चित है।
मुझे तुमने खूब तरसाया। अब मरने को तैयार हो जा।
सुनहरी उसे मारने ही वाली थी कि एक मकड़े को देख चिन्टू को आईडिया आया।
इसी से जान बच सकती है।
चिन्टू अचानक कांपते हुए चिल्लाने लगा...
हाय। इस जहरीले मकड़े ने काट लिया। जहर मेरे बदन में फैल रहा है।
यह सुनकर सुनहरी वापस चल पडी। चिन्टू का ब्रेकफास्ट करने का आइडिया उसने ड्रॉप कर दिया।
इस जहरीले को खाने से अच्छा है, मैं भूखी रह लूं।
सुनहरी के बाहर जाते ही चिन्टू ने दरवाजा बंद किया और जोर-जोर से गाने लगा
अप्रैल फूल बनाया, तो उनको गुस्सा आया। हमारा क्या कुसूर, दिमाग ने मुझको बचाया।

1. रिक्त स्थान भरो

यहां कुछ मुहावरे और कहावतें दी गई हैं जिनके रिक्त स्थान में सही अंक या संख्या की पूर्ति कर इस पहेली को हल करें।

1. .... दिन की चांदनी
2. .... कौड़ी का आदमी
3. .... दिन चले.........कोस
4. .... पंथ .... काज
5. ...., ... , ...होना
6. ज्यादा .... , ... मत कर
7. .... चांद लगाना
8. .... ही थैली के चट्टे बट्टे
9. .... के फेर में पड़ना
10. .... अंगुलियां घी में
11. .... , ... का अंतर होना
12. .... का दूध याद आना
13. .... नावों पर सवार होना
14. पौ .... होना
15. .... चूहे खाकर बिल्ली हज को चली
16. ढाक के .... पात
17. .... नकद, न .... उधार
18. लेना .... न देना ....
19. .... , ...आंसू रुलाना
20. ....अनार .... बीमार

2. शहरों के नाम ढूंढें

निम्नलिखित प्रत्येक वाक्य में एक भारतीय शहर का नाम छिपा है, आप खोजकर बताएं।

1. सोमवार को हिमालय एक्सप्रेस बंद रहेगी।
2. लखन ऊन का व्यापार करता है।
3. अभी आग राख से ढकी है।
4. आम्रपाली ने नृत्य का प्रशिक्षण लिया।
5. पार्टी में हंसराज कोट पहन कर आया।
6. राशि लॉन्ग जंप में भाग लेती है।
7. खूबसूरत दृश्य देखकर मन प्रसन्न हो गया।
8. मनोज को टायर फैक्ट्री में काम मिला।
9. अंबालाल ने आज बगीचा सींचा।
10. प्रभो पालनहार, मेरी विनती स्वीकारें।
11. मेरा मित्र आरोह तकदीर का धनी है।
12. शशि मलाई नहीं खाती।
13. मेरे नाना सिकंदर की कहानी कहते हैं।
14. अरविंद को विजय पुरस्कार मिला।
15. अमृत सरस्वती का पुजारी है।

प्रकाश तातेड़, उदयपुर

3. शब्द बनाओ

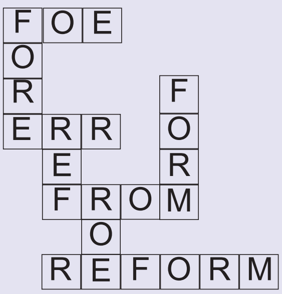

M R E R F O

4. अंक भरो

खाली खानों में इस तरह से अंक भरो कि जिधर से भी गिनती करें जोड़ 15 ही आए

15	15	15	15	15
15		9		15
15	3			15
15	8		6	15
15	15	15	15	15

5. नाता जोड़ो

एक फोटो को दिखाते हुए उत्कर्ष ने कहा, वह लड़का मेरे भाई के पिता की बेटी का बेटा है। बताओ उत्कर्ष का तसवीर वाले लड़के से क्या संबंध है ?

क. मामा, ख. चाचा, ग. पिता, घ. भतीजा

पहेलियों के उत्तर

1. रिक्त स्थान भरो

1. चार, 2. दो, 3. नौ, अढ़ाई, 4. एक, दो, 5. नो दो ग्यारह 6. तीन पांच, 7. चार, 8. एक, 9. निनान्वे, 10. पांचों, 11. उन्नीस, बीस 12. छठी, 13. दो, 14. बारह, 15. नौ सौ, 16. तीन, 17. नौ, तेरह, 18. एक, दो 19. आठ-आठ, 20. एक, सौ

2. शहरों के नाम ढूंढ़ें

1. कोहिमा, 2. लखनऊ, 3. आगरा, 4. पाली, 5. राजकोट, 6. शिलांग, 7. सूरत, 8. कोटा, 9. अंबाला, 10. भोपाल, 11. रोहतक, 12. शिमला, 13. नासिक, 14. जयपुर, 15. अमृतसर

3. शब्द बनाओ

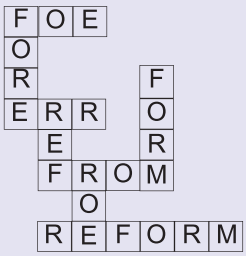

4. अंक भरो

15	15	15	15	15
15	4	9	2	15
15	3	5	7	15
15	8	1	6	15
15	15	15	15	15

5. नाता जोड़ो

क. मामा

पजल्स

इन महापुरुषों को पहचानिए और इनका जन्मस्थान बताइए।

क. राधानगर, ख. रत्नागिरि
ग. कोलकाता

आठ बहुमूल्य रत्न खोजिए

इस खोज में रेखाओं से आपस में जुड़े हुए किसी भी दिशा के वर्ग की ओर बढ़ा जा सकता है।

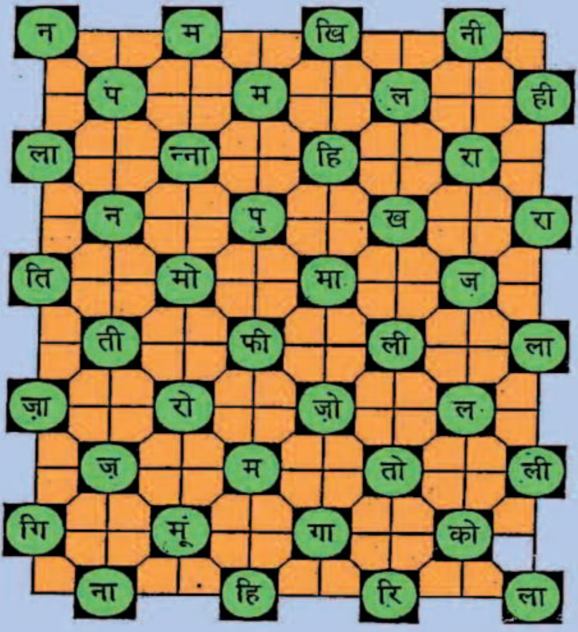

आइवर यूशिएल

उत्तर : पजल नं. 1 : 1. ख. रत्नागिरि, 2. ग. कोलकाता, 3. क. राधानगर, पजल नं. 2 : 3 नंबर का टुकड़ा, पजल नं. 3 : नीलम, पन्ना, हीरा, पुखराज, लाल, मोती, फीरोजा, मूंगा

राइजिंग स्टार

प्रिशा चौखड़ा : नन्ही लड़की–बड़ा काम

रामायण की चित्रमय झांकी से सबका मन मोहा

कला के लिए उम्र कोई मायने नहीं रखती। जरूरत केवल लगन की होती है। लगन लगने पर बड़े से बड़ा काम छोटा लगने लगता है। इसे फिर साबित किया नन्ही सी चित्रकार प्रिशा चौखड़ा

प्रिशा चौखड़ा की उम्र है 12 साल। वह ठाणे, महाराष्ट्र के पोद्दार इंटरनेशनल स्कूल में कक्षा 6 में पढ़ती है। ठाणे में ही रहने वाली प्रिशा अपने परिवार में सबसे छोटी और सबसे लाडली है। इसीलिए कोई उसे किसी भी काम के लिए नहीं कहता, पर वह अपनी इच्छा से सब के काम में सहायता करती है।

प्रिशा चौखड़ा की विशेष रुचि चित्रकारी, कला एवं शिल्प यानी आर्ट एंड क्राफ्ट, स्केटिंग, भरतनाट्यम और लघु पाक कला में है। कभी-कभी कहानी लिखने में भी वह हाथ आजमा लेती है और कई छोटी-छोटी कहानियां लिख चुकी है।

प्रिशा चौखड़ा का अपना यूट्यूब चैनल भी है, जिस पर वह अपनी रचनात्मकता को लोगों के सामने रखती है। जब कोरोना ने सारी दुनिया को ठहरा दिया था, उसके कारण बड़े तो बड़े, बच्चे भी अपने-अपने घरों में सिमट के रह गए थे। उनके खेलने-कूदने और मेल-मिलाप पर भी रोक लगा दी गई थी। ऐसे समय में सारे बच्चे उदास हो गए थे। परंतु प्रिशा चौखड़ा ऐसे बच्चों में नहीं थी। उसकी बड़ी बहन स्नेहा और मम्मी ने उसे प्रोत्साहित किया कि जबरन की इस छुट्टी में अपनी प्रतिभा लोगों के सामने प्रस्तुत करो। उसकी दीदी स्नेहा ने, जो केवल 14 साल की है, वीडियो बनाकर उसके अपने यू-ट्यूब चैनल पर अपलोड करने में बहुत मदद की।

एक दिन उसकी मौसी ने उसे सुझाव दिया कि आजकल सब दूरदर्शन पर रामायण देख रहे हैं, तुम भी देखती हो। तो क्यों ना रामायण को अपनी चित्रकारी द्वारा प्रस्तुत करो?

उनके कहने पर प्रिशा ने अपनी चित्रकारी पर मेहनत की। उसे रामायण बनाने के लिए मधुबनी पेंटिंग स्टाइल सबसे बढ़िया लगी। उसने पहले से मधुबनी पेंटिंग सीखी हुई नहीं थी। कमाल की बात है कि उसने किसी से प्रशिक्षण भी नहीं लिया था।

जब उसने रामायण पर काम करना आरंभ किया, तो थोड़ी कठिनाई हुई। परंतु धीरे-धीरे मधुबनी पेंटिंग में उसका हाथ और मन, दोनों रम गए।

पूरे रामायण को मधुबनी पेंटिंग के द्वारा प्रस्तुत करने में प्रिशा को करीब 30 दिन लगे, लेकिन यह 30 दिन कैसे बीते, उसे पता ही नहीं चला। जब उसने अपनी बनाई रामायण की पेंटिंग लोगों औरअपने स्कूल में टीचर्स के सामने प्रस्तुत किया, तो उसे बहुत शाबाशी मिली।

21 अप्रैल को रामनवमी है। तो इस अवसर पर देखिए रामायण की झांकी।

यू-ट्यूब चैनल
https://youtube.com/channel/UC1JQcHCrdBc2QKMGqdA__OA

मधुबनी पेंटिंग में रामायण

1

2

3

4

5

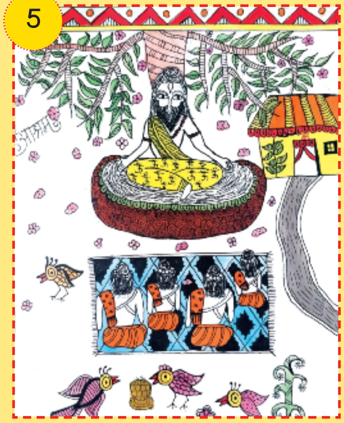

6

7

8

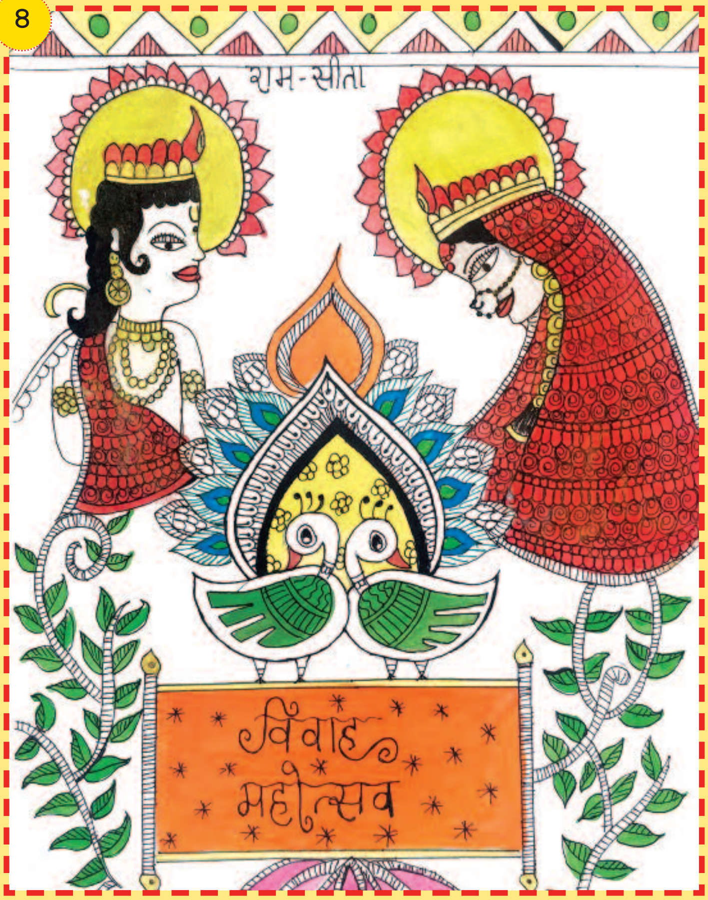

9

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

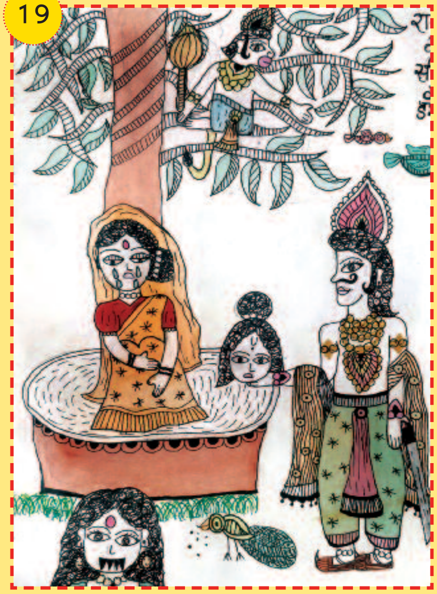

20

21

22

23

24

25

26

27

28

29

30

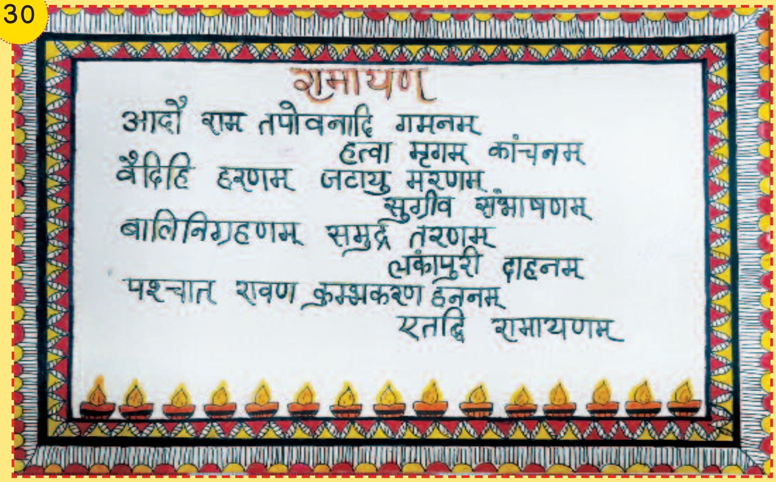

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो

email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है,दीप्ति मित्तल ने

तानिया कौशिक

तानिया कौशिक
उम्र : 9 वर्ष
कक्षा 4
स्कूल सेंट्रल स्कूल
बीकानेर, राजस्थान

काव्या श्रीवास्तव

नाम – काव्या श्रीवास्तव
उम्र : 8 वर्ष ,
कक्षा : 3
स्कूल : कनौसा कॉन्वेन्ट स्कूल, लखनऊ

नीतिका नीलाक्षी

विवान वरुण

आदिल सूद

नीतिका नीलाक्षी
उम्र : 7
कक्षा : 1
ए. वी. पब्लिक स्कूल,
कटिहार, बिहार

विवान वरुण
उम्र : 8
कक्षा : 3
केंद्रीय विद्यालय नं. 2,
चकेरी, कानपुर, उ.प्र.

आदिल सूद
उम्र : 12
कक्षा : 8
सीक्वैम सेकेंडरी स्कूल,
वेंकुवर, कनाडा

रजत तिवारी

खुशी कौशिक

रितिका वेदुला

रजत तिवारी
आयु : 11
कक्षा : 6
सेंट थामस स्कूल, बहादुरगढ़, हरियाणा

खुशी कौशिक
6 : वर्ष
कक्षा : 1, जैन पब्लिक स्कूल, सेठिया गली, बीकानेर, राजस्थान

रितिका वेदुला
आयु : 9 वर्ष,
कक्षा : चौथी,
डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल
झारसुगुडा, ओडिसा

काश, तुम नहीं आते कोरोना वायरस

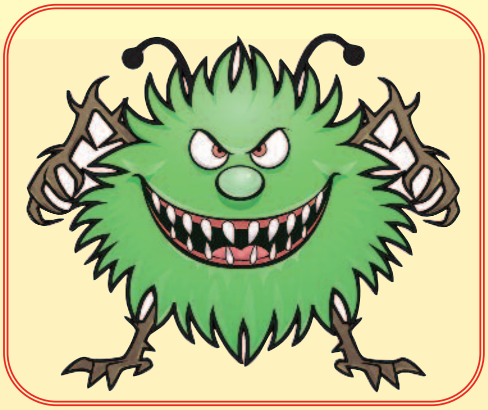

तुम मुझे नहीं पहचानते, कोरोना वायरस। लेकिन मैं तुम्हें पहचानता हूं। हमारे देश भारत वर्ष की संस्कृति में अतिथि को देवतुल्य माना जाता है। लेकिन मुझे बहुत दुख के साथ यह कहना पड़ रहा है कि तुम अतिथि कहलाने के योग्य नहीं हो।

क्या तुम्हें पता है कि तुमने हमारी खूबसूरत दुनिया को कितना नुकसान पहुंचाया है? बाकी सबको जाने दो, तुमने मुझे कितना नुकसान पहुंचाया है, जानते हो? नहीं न। क्योंकि तुमने कभी पढ़ाई की ही नहीं। स्कूल शब्द तुम्हारे लिए अनजाना है। तुम्हारी डिक्शनरी में केवल एक ही शब्द है और वह है 'संक्रमण'।

पिछले साल चार मार्च को मैं आखिरी बार अपने स्कूल गया था। तुम्हारी वजह से उस दिन के बाद मैं आज तक स्कूल नहीं जा पाया। तुमने इतना संक्रमण फैलाया कि मेरा स्कूल, मेरी दुनिया सब 'लॉकडाउन' के घेरे में आ गए। हम लैपटॉप, कंप्यूटर, स्मार्ट फोन की मदद से पढ़ने लगे। भला ऐसे भी कोई पढ़ाई होती है? तुमने यह सोचा ही नहीं कि हम कितनी देर कंप्यूटर पर बिताते हैं और इसका हमारी आंखों पर, हमारी सेहत पर कितना बुरा प्रभाव पड़ेगा ?

साल भर से मैं अपने दोस्तों से नहीं मिल पाया। हम केवल फोन पर बात करते हैं। पहले कितना मजा आता था स्कूल में, हम खेलते थे, पढ़ते थे, तरह-तरह की एक्टिविटी होती थीं, सभी दोस्त साथ में खाना खाते थे। तुमने यह सब खत्म कर दिया। तुम्हारी वजह से स्कूल जो बंद हुआ, अब तक नहीं खुला।

मुझे मेरा मैक्सफोर्ट, द्वारका स्कूल, मेरे दोस्त दानिश भाटी, वंश नडाल, अंश रोहिल्ला, मेरी मैम, पुष्पा मैम, ज्योति मैम, वंदना मैम, रिम्पी मैम, शालिनी मैम, सब बहुत याद आते हैं। तान्या मैम कितनी अच्छी अच्छी कहानियां सुनाती थीं और उनसे जोड़ कर विज्ञान के चैप्टर समझाती थीं। मैंने उन्हें कहा था कि मैं इलेक्ट्रो मैग्नेटिक का माडल बनाऊंगा। उन्होंने हां कहा था। लेकिन तुमने सब बर्बाद कर दिया। तुम्हारी वजह से मेरे जन्मदिन पर मेरी बहनें, मेरे दोस्त कोई नहीं आए।

तुम्हारी वजह से हम सबके चेहरे मास्क के पीछे छिप गए। जानते हो, मास्क लगाकर कितना बोझिल महसूस होता है।

तुमने पूरी दुनिया तहस-नहस कर दी। तुमने मेरे देश और दुनिया के कितने लोगों को मौत की नींद सुला दिया। तुम्हें यह समझ ही नहीं आया कि सड़कों पर, फुटपाथ पर रह कर जीवन गुजारने वाले बच्चों को लॉकडाउन में खाना कैसे मिला होगा।

हम तो अपने घरों में बंद हो गए। लेकिन वे कहां गए होंगे जिनके सिर पर छत ही नहीं है? तुम सोच ही नहीं सकते, क्योंकि जितना छोटा तुम्हारा शरीर है न, तुम्हारी सोच भी उतनी ही छोटी है। अभी भी किसी को पता नहीं है कि तुमसे कब पीछा छूटेगा।

अगर कंप्यूटर की मेमरी की तरह हमारी मेमरी इरेज करने वाली व्यवस्था होती न, तो मैं तुम्हारी परछाई वाला यह साल हमेशा के लिए अपनी मेमरी से इरेज कर देता।

अंश बाली
उम्र : 12 साल
कक्षा : सातवीं ए
स्कूल : मैक्सफोर्ट द्वारका स्कूल, नईदिल्ली

मेरी मां

तृतीय पुरस्कार

प्यारी-प्यारी मेरी मां
सबसे न्यारी मेरी मां।।

सुबह सवेरे हमें जगाए,
मीठी-मीठी डांट पिलाए
ब्रश करवातीं स्नान करातीं
दूध संग ब्रेकफास्ट करातीं

लंच टिफिन में रखतीं मां
सबका खयाल सदा रखतीं मां।।

पढ़-लिख जब हम घर आ जाते,
थक कर चूर-चूर हो जाते,
माथे पर प्यारी पप्पी मां,
बांहों की जादू झप्पी मां,
पल में सारी थकान भुला दे,
जादू की छड़ी सी लगती मां।।

बैग खोल होमवर्क देखतीं,
पास बिठा पूरा करवातीं,
पाठ पढ़ातीं याद करातीं,
पढ़ाई-लिखाई में पोल न करतीं,

चुटकी में सब कुछ हैं करतीं,
सुंदर परी सी लगतीं मां।।

रात जब वो मुझे सुलातीं,
वीरांगना लक्ष्मीबाई सुनातीं
हाड़ी रानी के किस्से सुनातीं,
सती सीता और सावित्री के,
सच्चे-सच्चे चरित सुनातीं,
प्रेममयी नवदुर्गा काली जैसी,
जग-जननी सी लगतीं मां।।

भारत मां के गीत सिखातीं,
देश-प्रेम का पाठ सिखातीं,
देश की रक्षा जो करते हैं,
मातृभूमि हित जो मरते हैं,
उनका चंदन वंदन करतीं
मातृभूमि सी लगतीं मां
सबसे न्यारी सबसे प्यारी,
जग से सुंदर मेरी मां।।

अरायना भटनागर,
उम्र : 7 वर्ष, कक्षा : 2
सेंट एंथोनी सीनियर सेकेंडरी स्कूल,
उदयपुर राजस्थान

तेरा प्यार न हो कम

मां तुझे रुलाया।
मां तुझे सताया।
पर तेरा प्यार कभी न हुआ कम।
हमेशा तेरा प्यार रहा कायम।
मां तूने चलना सिखाया।
मां तूने खाना सिखाया।
मां तूने जिंदगी जीना सिखाया।
तेरा प्यार मेरे लिए सदा कायम हो।
कभी तेरा प्यार मेरे लिए कम न हो।

सुधांशी पटेल
उम्र : 10 साल
कक्षा : 4,
केंद्रीय विद्यालय, महासमुन्द,
छत्तीसगढ़

जादुई चिराग था या...

लिली की उम्र यही कोई आठ वर्ष थी। वह बहुत बातूनी और हंसमुख थी। वह और जेडन एरिक बहुत अच्छे दोस्त थे और एक ही स्कूल में पढ़ते थे। दोनों शाम को साइकिल चलाने साथ-साथ जाते थे। दोनों खेलकर देर शाम सूरज ढलने पर घर लौटत थे।

एक दिन लिली और जेडन ने तय किया कि वे साइकिल करते हुए पहाड़ी पर जाएंगे। लिली ने जेडन से पूछा, "हम किस रास्ते से पहाड़ी पर चढ़ेंगे?"

जेडन ने मुसकराते हुए सबसे मुश्किल रास्ते की तरफ इशारा किया। लिली ने मुसकुाते हुए पूछा, "पक्का?"

दोनों दोस्तों ने हेलमेट लगाया और रोमांचकारी यात्रा पर चल पड़े। वे ऊंची पहाड़ियों पर चढ़ते गए। रास्ते मे मनभावन फूल, पेड़-पौधे देखने को मिले। ऊंचे-ऊंचे पेड़ उन्हें लुभा रहे थे।

रास्ता उबड़-खाबड़ था। दोनों सावधानी से आगे बढ़ रहे थे। तभी रास्ते में उन्हें एक सांप दिखाई दिया। लिली चिल्लाई, "जेडन, बचके, देखो सांप है।"

जेडन ने उसे चुप रहने का इशारा किया। फिर दोनों सावधानी सांप से बचकर आगे बढ़ गए । वे साइकिल से आगे चलते गए। तभी रास्ते में उन्हें एक गुफा दिखाई दी। लिली ने पूछा, "जेडन इस गुफा में चलकर देखें कि क्या है?"

जेडन मान गया और दोनों साइकिल से उतरकर गुफा के अंदर चले गए। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, गुफा में अंधेरा बढ़ता गया। थोड़ी दूरी पर उन्हें बड़े-बड़े पत्थरों पर की गई चित्रकारी नजर आई। इससे पता चल रहा था कि गुफा बहुत पुराना और ऐतिहासिक महत्व का है।

तभी जेडन को एक चमकता हुआ पत्थर दिखाई दिया। उसमें उत्सुकता से कहा, "लिली, देखो यह क्या है?"

उस पत्थर से हलकी-हलकी रोशनी निकल रही थी। दोनों थोड़ा घबराए। फिर लिली आगे बढ़ी और पत्थर को उठा लिया। जैसे ही उसने पत्थर को उठाया, जेडन की चीख निकल गई, क्योंकि लिली अब अदृश्य हो गई थी। जेडन लिली को चारों तरफ ढूंढ़ने लगा, पर उसे लिली दिखाई नहीं दे रही थी।

तभी उसे एक आवाज सुनाई दी, "जेडन, मुझे बचाओ।"

जेडन चिल्लाकर बोला, "मुझे माफ करना लिली। तुम मुझे तो दिखाई नहीं दे रही हो।"

जैडन लिली को ढूंढ़ता रहा। अब थोड़ी दूरी पर उसे एक जादुई चिराग दिखाई दिया। उसने चिराग को साफ किया, तो उससे एक जबरदस्त रोशनी निकली और जेडन को कुछ भी दिखाई देना बंद हो गया। थोड़ी देर बाद जब उसने आंखें खोलीं, तो देखा, वह लिली के करीब खड़ा था।

अपने दोस्त को देखकर जेडन को बहुत खुशी हुई। लिली हंस रही थी। जेडन खुशी से बोला, "जानती हो लिली, इस चिराग की मदद से मैं तुम्हें ढूंढ पाया, नहीं तो तुम गायब हो गई थी।"

लिली हंसते हुए बोली, "क्यों मुझे बेवकूफ बना रहे हो? हम तो तब से यही खड़े हैं। ना मैं कहीं गई थी, ना तुम कहीं गए थे। मुझे ऐसी बेवकूफी की कहानियां मत सुनाया करो। चलो घर चलते हैं, हमें देर हो रही है।"

जेडन को विश्वास नहीं हुआ कि लिली को कुछ भी याद नहीं है।

दोनों दोस्त घर लौट चले। जेडन अभी भी इस अद्भुत घटना के बारे में सोच रहा था। हालांकि वह खुश था कि उसकी दोस्त लिली सही सलामत लौट आई थी।

वाणी बंसल
उम्र : 11 साल
कक्षा : 5
हेज एलिमेंटरी स्कूल, कैलिफोर्निया, अमेरिका

शापित रबर-पेंसिल की दोस्ती

कई दशकों पहले की बात है, पुस्तिकाराज के महाराज पन्नेश्वर के दरबार में पांच मंत्री रहते थे, कलमेश, पेंसिल प्रताप, रबर कुमार, पेंसिलछीलन और कूंचीराम। इन पांचों मंत्रियों के बिना पन्नेश्वर का दरबार सूना प्रतीत होता था।

पेंसिल प्रताप और रबर कुमार की दोस्ती बहुत गहरी थी। दोनों की गहरी मित्रता मंत्री कलमेश को पसंद नहीं था। वह उनकी दोस्ती को किसी भी कीमत पर तोड़ना चाहता थे और इस कार्य में उसका सहयोगी मंत्री पेंसिलछीलन था।

एक बार महाराज पन्नेश्वर किसी कार्य से राज्य से बाहर गए। उन्होंने अपने राज्य का उत्तरदयित्व पेंसिल प्रताप को सौंप दिया।

एक दिन पेंसिल प्रताप अपने मित्र के साथ काम कर रहा था, तभी रबर कुमार के पास सेनापति का संदेश आया, 'मंत्री रबर कुमार को महाराज का संदेश है कि दरबार की पूरी कार्यवाही मंत्री कलमेश को सौंपा जाता है और उनके इस कार्य में रबर कुमार उनकी सहायता करेंगे।'

परंतु रबर कुमार ने महाराज के आदेश को यह कहते हुए ठुकरा दिया कि वह अपने मित्र से अलग नहीं होगा। वह अपनी अंतिम सांस तक मित्र की ही सहायता करेगा।

तभी पीछे से महाराज पन्नेश्वर पधारे। उन्होंने उन दोनों की पूरी बातचीत सुन ली थी।

"मंत्री रबर कुमार और पेंसिल प्रताप, आप दोनों दरबार में आएं।" महाराज काफी क्रोधित थे क्योंकि उनके आज्ञा मानी नहीं गई थी।

"मगर, महाराज, यह कार्यभार तो मुझे सौंपा गया था ना? फिर...!" पेंसिल प्रताप बोला।

"महाराज की मर्जी तुमने नकारी है, सजा तो मिलेगी। बड़ी अच्छी दोस्ती है तुम दोनों की। अब साथ में मरो!" पेंसिलछीलन और कलमेश बोलते हुए उनके पास आए।

सभी म्सभा में पहुंचे। मंत्री पेंसिल

प्रताप और रबर कुमार बहुत भयभीत थे परंतु महाराज के फैसले ने तो सबके अपने होश ही उड़ा दिए। किसी को भी महाराज से यह उम्मीद नहीं थी। महाराज ने मंत्री कलमेश और पेंविलछीलन को मंत्री पद से हटाकर काल कोठरी का रास्ता दिखा दिया।

"महाराज, हमसे कौन सी भूल हो गई है, जो आप हमें पूरी सभा के सामने लज्जित कर सजा सुना रहे हैं?" पेंसिलछीलन ने पूछा।

" आपने मेरे अनुपस्थिति में मंत्रियों को गलत खत और सूचना पहुंचाई, मुझे गुमराह किया, ताकि इन दोनों की दोस्ती कलंकित हो जाए!" महाराज ने क्रोध में कहा।

"महाराज, आपने उस समय हमें क्यों कहा कि हमने आपकी आज्ञा की अवहेलना की है?" रबर कुमार ने प्रश्न किया।

"क्योंकि उस वक्त हमें पूर्ण सत्य ज्ञात नहीं था। सैनिकों! ले जाओ इन दुष्टों को यहां से।" महाराज ने कहा।

"बड़ा नाज है ना, तुम्हें अपनी दोस्ती पर, रबर कुमार! मेरा शाप है तुम्हें कि तुम हमेशा समाप्त होने के स्थान पर गायब हो जाओगे! तुम्हें कभी मोक्ष प्राप्ति नहीं होगी।" कलमेश ने उत्तेजित हो कर कह दिया।

"मै भी अभी जा रहा हूं, पेंसिल प्रताप ! पर तुम्हें भी मेरा शाप है कि लोग मेरा उपयोग जब भी करेंगे तब तुम्हारी उम्र कम होती जाएगी। मैं ही तुम्हारे अंत का कारण बनूंगा।" पेंसिलछीलन ने भी शाप दिया। फिर सैनिक उन दोनों को ले गए।

यहीं कारण है कि रबर कभी समाप्त नहीं होता और उपयोग के बाद पेंसिल छोटी होती जाती है और इसी वजह से इन दोनों की दोस्ती शापित दोस्ती कहलाने लगी।

नाम - परिणीता
उम्र - 14 वर्ष
कक्षा - 9
संत जोसफ कॉन्वेंट हाई स्कूल

पुस्तक परिचय

पुस्तक : चलें भ्रमण की ओर
रचनाकार : डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'
प्रकाशक : नमन प्रकाशन,
4231 / 1 , अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली
मूल्य : रु. 250

यात्रा वृत्तांत 'चलें भ्रमण की ओर' ऐसी गद्य कृति है, जो बच्चों को लक्ष्य करके लिखी गई है।

डॉ. सुधा गुप्ता की यह उक्ति बिल्कुल सटीक है, 'यात्राएं इंसान को ही नहीं, नजरिये को भी बदलती हैं।'

इस पुस्तक में कुल दस यात्रा आलेख संग्रहीत हैं। हर आलेख यात्रा की प्रेरणा तो देता ही है, ऐसी प्रतीति भी कराता है, मानो हम यात्रा कर रहे हों।

अपने यात्रा वृत्तांतों का शुभारम्भ लेखिका ने जबलपुर से किया है। जबलपुर के उल्लेखनीय स्थानों की जानकारी देते हुए उन्होंने मदनमहल पहाड़ी स्थित रानी दुर्गावती का किला, संतुलन शिला, पिसनहारी की मढ़िया के दर्शन, फिर नर्मदा की उच्छल शीतल धारा में उछलकूद, भेड़ाघाट की चट्टानों तथा दुग्ध धवल धुआंधार जल प्रपात की उठती-गिरती धाराओं का मनोहारी वर्णन किया है।

यात्रा वृत्तांत 'केसरिया बालम पधारो म्हारे देस' में अरावली पर्वत की गोद में बसे अजमेर यात्रा में सुधा जी ने सृष्टि नियंता की नगरी पुष्कर, सूर्य नगरी जोधपुर और स्वर्ण नगरी जैसलमेर के चित्र भी अंकित किए हैं।

'एक कली दो पत्तियां' यात्रा वृत्तांत का शीर्षक असम की चाय संस्कृति को अभिव्यंजित करता है।

'ओ जंगल के राजा' यात्रा वृत्तांत में बांधवगढ़ अभ्यारण्य की यात्रा शामिल है। पुस्तक में आखिरी यात्रा वृत्तांत 'गंगा आये कहां से, गंगा जाये कहां रे' है। तीर्थराज प्रयाग (इलाहाबाद) जाकर उन्होंने न केवल गंगा, अपितु गंगा-यमुना-सरस्वती के संगम में तीनों पवित्र नदियों के दर्शन किए। यात्रा वृत्तांतों में गहरे उतरने पर महसूस हुआ कि सुधा जी का विषय प्रतिपादन बेजोड़ है। तथ्यपूर्ण, जानकारी परक विषयवस्तु, सटीक शब्द चयन, बेहद रोचक प्रवाहमय भाषाशैली उनके कथ्य और शिल्प की उल्लेखनीय विशेषताएं हैं '

समीक्षक : अश्वनी कुमार पाठक

पुस्तक : डिजाइनर घोंसला
लेखक : शिखर चंद जैन
प्रकाशक : अंतरा शब्दशक्ति, 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (मध्य प्रदेश)
फोन : 9424765259
कीमतः रु. 150

शिखर जी के इस संग्रह में 21 कहानियां हैं। हर कहानी बच्चों को जीवन का कुछ न कुछ नया पाठ पढ़ा ही देती है, वह भी रोचक और आसान भाषा में।

'डिजायनर घोंसला' और 'चांद पर कूड़ा' जैसी कहानी पर्यावरण के विषय में बच्चों का ज्ञानवर्धन करती है। कोई कहानी टेक्नोलोजी की समझ देती है, तो कुछ कहानियां जंगल और अलग अलग जानवरों के बारे में खेल खेल में समझा जाती हैं। जीवन में व्यावहारिक शिक्षा कितनी जरूरी है, यह 'पिघल गए तरबूज', 'चतुरवन में भोलू भेड़िया', 'नए अंदाज में दीवाली', 'गलती कहां हुई' जैसी कहानियों में रोचक अंदाज में बताया गया है।

पंचतंत्र की कहानियों की तरह ही शिखर जी ने जानवरों के माध्यम से बच्चों के लिए शिक्षाप्रद कहानियां बुनी हैं। कहानियां पढ़कर ऐसा लगता है कि वे अच्छी तरह बाल मन को समझते हैं और खुद को उनकी उम्र के हिसाब से ढालकर उनके मन में कैसे प्रवेश करना है ये भी बखूबी जानते हैं।

कहानी की भाषा और शिल्प बच्चों के हिसाब से चुना गया है। कहानी की पहली शर्त होती है, पठनीयता जिसकी कसौटी पर लेखक खरे उतरते हैं। हर कहानी ऐसी है जिसे एक सांस में पढ़ा जा सके। हर कहानी सकारात्मक संदेश देती है और लेखक को हर विषय पर कितना ज्ञान है और बच्चों को किस तरह मनोरंजक तरीके से ज्ञान और समझ देनी है, ये कहानी पढ़कर पता लगता है।

इस संग्रह की एक सबसे अलग और विशेष बात जो इस संग्रह को भीड़ से अलग करती है, वो ये कि बच्चों के साथ-साथ ये हर उम्र के लोगों को भाएगी और उनका ज्ञान भी खेल खेल में बढ़ा देगी।

बाल कहानी के क्षेत्र में शिखर जी का ये कदम काफी मजबूत है। आगे भी बच्चों के लिए इसी तरह काम करेंगे, इसकी उम्मीद हैं।

समीक्षक : अर्चना चतुर्वेदी

आईपीएल
क्रिकेट का प्रीमियर टूर्नामेंट

अनिल जायसवाल

क्रिकेट का खेल जब शुरू हुआ, तो कई टेस्ट मैच ऐसे खेले गए, जिनमें फैसला होने तक खेल जारी रखने पर सहमति थी। फिर ऐसा समय आया, जब लोग पांच दिन के टेस्ट क्रिकेट से भी ऊबने लगे और मैदान से दर्शक गायब होने लगे।

ऐसे में क्रिकेट को रोचक बनाने के लिए 1971 में एक दिन के मैच शुरू हुए। लगा, इसके सहारे दर्शकों को स्टेडियम में खींचा जा सकेगा। ऐसा हुआ भी। एक दिवसीय क्रिकेट की लोकप्रियता ने क्रिकेट के व्यवसायिक पक्ष को उभारा। पहली बार देश के क्रिकेट बोर्ड से अलग बिजनेसमैन भी क्रिकेट से आ सकने वाले पैसे की तरफ आकर्षित हुए। ऑस्ट्रेलिया में कैरी पैकर को जब क्रिकेट प्रसारण का अधिकार नहीं मिला, वह दुनिया के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेटर्स को खरीदकर खुद अपना टूर्नामेंट कर उसका प्रसारण करने लगा। आज तुम जो रंगीन कपड़े पहनकर क्रिकेटर्स को वन डे या 20-20 में खेलते देखते हो, यह कैरी पैकर की ही देन है। बाद में ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट बोर्ड ने कैरी पैकर से समझौता किया, तब जाकर क्रिकेट का यह संकट खत्म हो पाया।

इसके बाद करीब 30-35 वर्ष तक भी एकदिवसीय क्रिकेट का बुखार लोगों पर चढ़ा रहा। पर समय के साथ लोग इससे भी कुछ ऊबने लगे।

अब यह एक नई समस्या सामने आ गई। क्रिकेट का खेल अब तक एक व्यवसाय भी बन चुका था। ऐसे में बदलते समय और लोगों को ध्यान में रखकर कुछ लोगों ने फटाफट

क्रिकेट को नया रूप दिया। इसमें 20-20 ओवर के दो इनिंग्स निर्धारित किए गए। इसे नाम दिया गया 'ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट' अर्थात बीस-बीस ओवर के मैच।

जिस तरह रंगीन कपड़े पहनकर एकदिवसीय क्रिकेट खेलने का उसके आरंभिक दिनों में 'सर्कस क्रिकेट' या 'पाजामा क्रिकेट' कहकर मजाक उड़ाया जाता था, उसी तरह 20-20- क्रिकेट को 'इंस्टेंट क्रिकेट' या 'नूडल्स क्रिकेट' कहकर इसकी खिल्ली उड़ाई गई।

क्रिकेट के हर संस्करण की तरह इस बार भी पहला ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट मैच कराने का श्रेय इंग्लैंड को ही मिला। इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड के प्रयासों से 13 जून 2003 को हैंपशायर और ससेक्स के बीच पहला ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट मैच रोजबाउल में खेला गया। इसे हैंपशायर ने पांच रन से जीता।

इसकी लोकप्रियता को देखकर 17 अगस्त 2005 को एकदिवसीय क्रिकेट के विश्व चैंपियन ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच पहला अंतर्राष्ट्रीय ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट मैच ऑकलैंड (न्यूजीलैंड) में खेला गया।

रोहित शर्मा: टूर्नामेंट के सबसे ज्यादा कप्तान

इसमें न्यूजीलैंड को 44 रन से हराकर ऑस्ट्रेलिया ने जीत हासिल की। खास बात यह है कि पहला टेस्ट मैच और पहला एकदिवसीय क्रिकेट मैच खेलने व जीतने का श्रेय भी ऑस्ट्रेलिया को ही मिला है।

20-20 की बढ़ती लोकप्रियता को देखकर इसे क्रिकेट चलाने वाली संस्था आई.सी.सी. ने अपने हाथ में ले लिया। पहली बार ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट मैचों की विश्व चैंपियनशिप का आयोजन दक्षिण अफ्रीका में हुआ। 11 से 24 सितंबर 2007 तक आयोजित प्रतियोगिता में दस टेस्ट खेलने वाले देशों (भारत, पाकिस्तान, वेस्टइंडीज, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका, जिंबाब्वे और बांग्लादेश) के अलावा दो एसोशिएट देश आयरलैंड और केन्या की टीमों ने भाग लिया।

ट्वेंटी-20 क्रिकेट की लोकप्रियता देख जी टीवी के संस्थापक सुभाष चंद्रा ने भारतीय क्रिकेट बोर्ड के सामने एक 20-20 टूर्नामेंट आयोजित करने का प्रस्ताव रखा। लेकिन भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने मना कर दिया। तब कैरी पैकर के तर्ज पर भारत में प्राइवेट टूर्नामेंट 'आईसीएल' यानी 'इंडियन क्रिकेट लीग' की स्थापना की गई। परंतु 2007 में आईसीसी द्वारा 20-20 क्रिकेट विश्व कप कराने का निर्णय लेने के बाद बीसीसीआई ने अपना टूर्नामेंट शुरू करने का निर्णय लिया। उन्होंने अपने टूर्नामेंट का नाम 'इंडियन प्रीमियर लीग' रखा।

भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने इसे सर्वश्रेष्ठ टूर्नामेंट बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। तय हुआ कि इस टूर्नामेंट में आठ टीमें होंगी। इन टीमों को नीलामी के सहारे बेचा गया। भारत के सबसे अमीर परिवार अंबानी के साथ तत्कालीन क्रिकेट बोर्ड के चीफ श्रीनिवासन, सुपर स्टार शाहरुख खान, जूही चावला, प्रीति जिंटा और उस समय के सफल

व्यवसायी विजय मालया भी टीम को खरीदने में सफल रहे।

इन आठों टीम के लिए पूरी दुनिया के प्रसिद्ध खिलाड़ियों को नीलामी में टीमों ने खरीदा। पहला टूर्नामेंट 2008 में खेला गया। फाइनल में महेंद्र सिंह धोनी की 'चेन्नई सुपर किंग्स' हराकर शेन वार्न की टीम 'राजस्थान रॉयल्स' विजेता बनी।

तब से लगातार पूरे आन बान और शान से यह टूर्नामेंट आयोजित हो रहा है। इस टूर्नामेंट का आयोजन विदेश में भी हुआ है। 2009 का पूरा टूर्नामेंट दक्षिण अफ्रीका में हुआ। उस साल भारत में संसदीय चुनाव के कारण टूर्नामेंट आयोजन की अनुमति नहीं दी गई थी। ऐसे ही 2014 में भी टूर्नामेंट का शुरुआती भाग संसदीय चुनाव के कारण संयुक्त अरब अमीरात में खेला गया। कोविड के प्रकोप के कारण 2020 का आई पी एल भारत की जगह संयुक्त अरब अमीरात में खेला गया।

टीमों की बात करें तो की सबसे सफल टीम 'मुम्बई इंडियंस' और 'चेन्नई सुपर किंग्स' को मान सकते हैं। चेन्नई आठ बार टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचने के साथ तीन बार चैंपियन बनने में सफल रही। जबकि 'मुंबई इंडियंस' 6 बार फाइनल में पहुंची, पर सबसे ज्यादा पांच बार चैंपियन बनी। उसे पांचों बार सफलता रोहित शर्मा की कप्तानी में मिली।

विराट कोहली : टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा रन

लसिथ मलिंगा : टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा विकेट

डेविड वॉर्नर : सबसे सफल विदेशी बल्लेबाज

बीच में पांच टीमें जुड़ी और हटी भी। 'डक्कन चार्जर्स' के बदले 2013 में 'सनराइजर्स हैदराबाद' को मौका दिया गया। बीच में दो साल 'पुणे वॉरियर्स' और 'कोच्चि टस्कर्स केरला' की टीम आई। दो साल के लिए चेन्नई और राजस्थान रॉयल्स की टीम पर बैन लगा था तो दो नई टीमें 'राइजिंग पुणे' और 'गुजरात लॉयंस' की टीमें शामिल की गई थीं।

अब अगला आईपीएल 9 अप्रैल से 30 मई तक भारत में खेला जाएगा। इन मैचों में दर्शकों का आने की इजाजत नहीं दी गई है। हालांकि बाद में निर्णय को बदला भी जा सकता है।

किसी भी टीम को उसके होम ग्राउंड में खेलने का मौका नहीं दिया गया है। पहला मैच मुंबई इंडियंस और रॉयल चैलेंजर बंगलुरु के बीच अहमदाबाद में खेला जाएगा। सारे मैच दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चैन्नई, बंगलुरु और अहमदाबाद में खेले जाएंगे।

हंसना जरूरी है

बंटी के डैडी बहुत कंजूस थे। एक दिन बंटी बोला, "डैडी, मेरी दूर की नजर कमजोर हो गई है। मुझे चश्मा खरीद दीजिए।"
दूर आसमान की ओर इशारा करके बंटी के कंजूस डैडी बोले, "वह क्या है ?"
बंटी बोला, "सूरज।"
पापा बोले, "और कितनी दूर देखेगा ?"

रोनित दुकानदार से बोला, "अंकल, प्रिंटर के लिए पेपर दे दीजिए।"
दुकानदार, "ए 4 ?"
राहुल, " मुझे मालूम है, ए 4- एप्पल होता है ! अब जल्दी से पेपर दे दीजिए।"

हर्ष गोलगप्पे खाने गया, "गोलगप्पे कैसे दे रहे हो भइया ?"
गोलगप्पे वाला, "सौ रुपए के पांच।"
हर्ष, "इतने महंगे क्यों , गोलगप्पे में पानी भरकर दे रहे हो या पेट्रोल ?"

चाचा, "तुम हर वक्त मोबाइल पर गेम खेलते हो, तो पढ़ाई किस वक्त करते हो ?"
रमन, "चार बार पढ़ता हूं रोज।"
"लेकिन कब ?"
"जब मोबाइल चार्जिंग पर लगा होता है।"

सिक्योरिटी गार्ड की नौकरी के लिए इंटरव्यू चल रहे थे। एक व्यक्ति से सवाल किया गया, "आपको अंग्रेजी आती है क्या ?"
वह चिढ़कर बोला, "चोर अमेरिका से आएंगे क्या ?"

टीचर, "राजू, बताओ कि स्वर और व्यंजन में क्या फर्क होता है ?"
राजू, "सर, स्वर मुंह से बाहर निकलते हैं और व्यंजन मुंह से अंदर जाते हैं।"

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। एक अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, पर सबके सहयोग से अपनी बात लोगों तक मजबूती से जरूर रख सकता है। अब पायस का चौथा अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। चाहे वरिष्ठ हों अथवा युवा साथी, सभी ने यथासंभव सहयोग दिया। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. डॉ. विमला भंडारी
2. मोनिका अग्रवाल
3. दीप्ति मित्तल
4. पंकज राय
5. दिव्यांश श्रांगी
6. उषा छाबड़ा
7. देशबंधु शाहजहांपुरी
8. संजीव जायसवाल 'संजय'
9. सिराज अहमद

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
ANIL JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ-साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

- संरक्षक बनकर
- मासिक अनुदान देकर
- यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर
- विज्ञापन देकर
- हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर
- किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**